



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-30

कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 18 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2017 तक

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी से कार्तिक शुक्ल चतुर्थी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

मोदी जी अब
तो २०....

पृष्ठ- 3

मानसिक
तनाव दूर.....

पृष्ठ- 4

छठ महापर्व
की...

पृष्ठ- 5

हिन्दू अस्तित्व
और...

पृष्ठ- 8

रेलवे बहुत
दुखी...

पृष्ठ- 12

शुभकामना संदेश

सभी देशवासियों व
पाठकों को भगवान
सूर्य की अराधना के
महान छठपर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं।

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

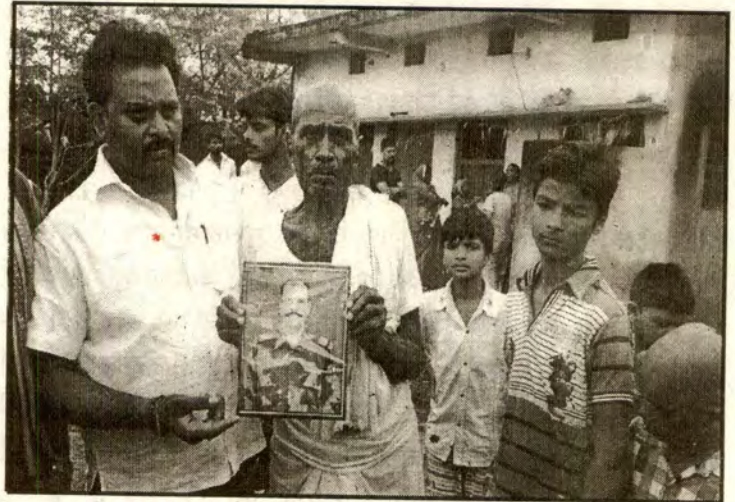
शहीद की बेटी ने कहा हमें पिता के बलिदान के
बदले १०० पाकिस्तानी आतंकवादियों के सिर चाहिए
आतंकवाद तुरन्त बन्द हो—हिन्दू महासभा

बीएसएफ के एसआई

ब्रिज किशोर यादव के श्रीनगर में
आतंकवादी हमले में शहीद होने
के एक दिन बाद उनकी बेटी
सुषमा कुमारी ने कहा कि देश के
लिए उनके पिता के सर्वोच्च
बलिदान की भरपाई करने के लिए
१०० पाकिस्तानी आतंकवादियों को
मारना चाहिए। सुषमा ने कहा
हम हमारे पिता के बलिदान के
लिए १०० पाकिस्तानी आतंक-
वादियों के सिर चाहते हैं। उन्होंने
कहा कि जब तक भारत सरकार
उनके पिता

शेष पृष्ठ 11 पर

● संवाददाता ●

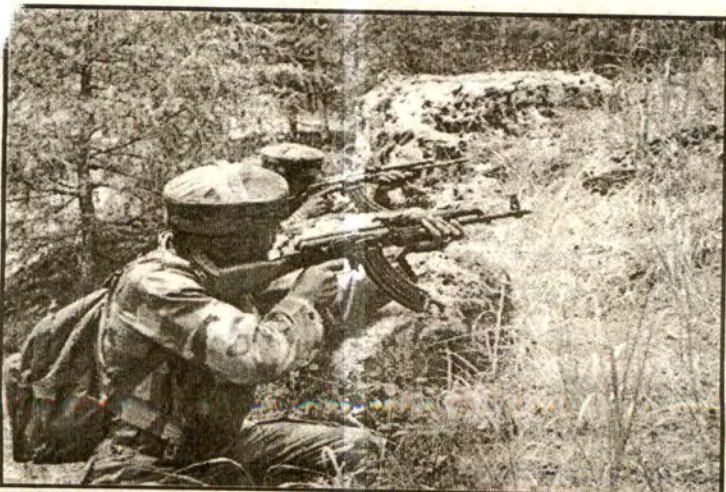


पाकिस्तान ने भारतीय उप उच्चायुक्त को किया तलब, संघर्ष
विराम के उल्लंघन का आरोप
सीमा पार घुसपैठ बंद करे पाकिस्तान—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा पर भारतीय सैनिकों द्वारा संघर्ष विराम उल्लंघन का आरोप लगाते हुए इस मामले में भारत के उप उच्चायुक्त को तलब किया। विदेश कार्यालय ने एक बयान में आरोप लगाया कि भारतीय बलों ने ३० सितंबर और २ अक्टूबर को रुख चकरी तथा रावलकोट सेक्टरों में गोलीबारी की जिसमें उनके तीन नागरिक मारे गये और एक महिला समेत पांच अन्य घायल हो गये। बयान के अनुसार महानिदेशक दक्षिण एशिया और दक्षिण मोहम्मद फैजल ने भारतीय उप उच्चायुक्त जेपी सिंह को तलब किया और भारतीय बलों पर बिना उकसावे के संघर्ष विराम का उल्लंघन करने का आरोप लगाते हुए इसकी निंदा की। फैजल ने दावा किया कि पिछले १२ दिन में भारतीय बलों द्वारा यह पांचवीं बार किया गया संघर्ष विराम उल्लंघन है जिसमें पांच महिलाओं समेत ११ लोगों की मौत हो गयी और ३७ अन्य घायल हो गये। उन्होंने कहा कि संयम बरतने के अनुरोध के बावजूद भारत लगातार संघर्ष विराम उल्लंघन कर रहा है। फैजल ने कहा जानबूझकर नागरिकों पर निशाना साधना निश्चित रूप से निंदनीय है और मानवीय गरिमा तथा अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकारों एवं मानवीय कानूनों के खिलाफ है। भारत द्वारा संघर्ष विराम का उल्लंघन करना क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा के लिए खतरा है। उन्होंने कहा कि भारतीय पक्ष

शेष पृष्ठ 11 पर



भारत के हिन्दू बुद्धिजीवियों के विचारार्थ कुछ यक्ष प्रश्न

यक्ष प्रश्न १: मुस्लिम जनसंख्या में अतुलनीय वृद्धि का परमाणु बम कैसे बना?

अरब में इस्लाम के उदय के बाद कुछ ही दशकों में पड़ोसी देशों सीरिया, ईराक, मिस्र आदि को भी मुस्लिम देश बना लेने में जिहादी आक्रांत सेनाएँ सफल रहीं। फिर भारत भूमि पर भी आक्रमण प्रारंभ हुए। लगभग ८० वर्षों तक बार-बार होते रहे इन आक्रमणों को आर्यवीरों ने पूर्णतः विफल करने में सफलता पाई। परन्तु सन् ७१२ ई. में मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध के राजा दाहिर को भीषण युद्ध में पराजित कर दिया और यह पहला अवसर था जब लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया गया। यद्यपि २ वर्ष बाद ही सिंध पर बप्पा रावल (राजा मेवाड़) की सेनाओं ने पुनः अधिकार कर लिया, किन्तु मुस्लिम आक्रमण भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर चलते रहे। महमूद गजनवी, मोहम्मदगौरी आदि आक्रांताओं के सतत आक्रमणों के बाद अंततः १२०६ ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का बादशाह बना। निरंतर ५०१ वर्ष तक मुस्लिम बादशाहों का यह क्रम औरंगजेब की सन् १७०७ ई. में हुई मृत्यु तक बना रहा। बाद में १८५७ तक भी कई मुस्लिम शासक दिल्ली की सल्तनत चलाते रहे। इस कालखण्ड में १७५७ ई. में कलकत्ता (बंगाल) आदि क्षेत्रों पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन प्रारंभ हुआ। १७५७ से प्रारंभ कर अंग्रेजी राज १८४८ ई. तक सारे भारत पर छा गया। अंततः १५ अगस्त १९४७ को देश विभाजन की दुखद घटना के साथ देश स्वतंत्र हुआ। ७१२ ई. से लेकर १९४७ ई. तक १२३५ ई. वर्षों में मुस्लिमों व ईसाइयों (अंग्रेजों) ने भारत के अधिकांश भाग को पराधीन (गुलाम) बनाए रखा।

गुलामी के इस भयावह कालखण्ड में ७१२ ई. से १९४७ ई. तक भारत में कुल लगभग ११ करोड़ मुसलमान व ७० लाख ईसाई जनसंख्या जनगणना १९४१ के आँकड़ों के आधार पर बताई गई। इनमें से ७ करोड़ मुस्लिम पाकिस्तान चले गए और ३ करोड़ भारत में रह गए। अब २०११ की जनगणना के अनुसार भारत में १७.५ करोड़ मुस्लिम हैं। **यक्ष प्रश्न यह है कि विदेशी व विधर्मी शासन के १२३५ वर्ष की दासता के बाद भी वर्तमान भारत में कुल मुस्लिम जनसंख्या रही ३ करोड़ जो ६८ वर्ष के स्वतंत्र भारत में हो गई १७ करोड़ से अधिक। १२ शताब्दी में ३ करोड़ मुस्लिम बने और ६८ वर्ष में १४ करोड़ मुस्लिम? गणित की यह जटिल पहेली बुद्धिजीवियों को हल करनी होगी।**

यक्ष प्रश्न २ : ईसाइयों (अंग्रेजों) के लगभग २०० वर्ष के राज में ईसाई बने कुल ७० लाख परन्तु स्वतंत्र भारत के ६८ वर्षों में ईसाई जनसंख्या हो गई ३ करोड़। क्या है इस स्वतंत्रता का मर्म? खोजना होगा बुद्धिजीवियों को इस यक्ष प्रश्न का समुचित उत्तर। **यक्ष प्रश्न ३ :** पराधीन भारत के ब्रिटिश राज में केवल एक प्रदेश (जम्मू कश्मीर) था हिन्दू अल्पसंख्यक। परन्तु स्वाधीन भारत के ६८ वर्षों में हिन्दू अल्पसंख्यक राज्य हैं आठ— जम्मू, कश्मीर, लक्षद्वीप, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय व मणिपुर। नौवाँ राज्य असम की आगामी कुछ दशक में हिन्दू अल्पसंख्यक वाला राज्य बनने की स्थिति में आ चुका है।

यक्ष प्रश्न ४ : अंग्रेजी शासन में १९४७ तक एक भी ईसाई राज्य नहीं बन सका। परन्तु स्वतंत्र भारत के केवल ४० वर्षों में ही बन गए तीन ईसाई राज्य— नागालैण्ड, मिजोरम व मेघालय। कृपया तुष्टीकरण के इस अन्धानुकरण की जटिल पहेली में उलझे यक्ष प्रश्नों का उत्तर खोज कर धर्मनिरपेक्षता के नाम पर किए जा रहे छद्म प्रयोगों पर अपना अभिमत अवश्य प्रस्तुत करें।

दिनेश चन्द्र त्यागी : पूर्व अध्यक्ष

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोग आपकी शान्ति भंग करने की कोशिश करेंगे। व्यवसाय में नौकरो-चाकरों से सावधान रहने की आवश्यकता है। सामाजिक गतिविधियों में उतार-चढ़ाव बना रह सकता है। जो लोग पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं, उनसे दूरी बनाये रखना ही उचित है।

वृष : दूसरों पर निर्भर न रहकर आपको स्वयं के विवेक का उपयोग करके कठिन श्रम करना होगा। व्यवसायिक कार्यों में प्रगति धीमी गति से होगी सहयोगी आपके प्रति संशय से भरे रहेंगे और मदद करने से कतराते नजर आयेंगे। लम्बित मुकदमों में निर्णय आपके पक्ष में आ सकता है।

मिथुन : योजनाओं और रणनीतियों का गहरा सम्बन्ध है, इसलिए बेहतर रणनीतियों के तहत योजनाओं का क्रियान्वयन करना ज्यादा लाभकारी सिद्ध होगा। प्रतिस्पर्धा में आप लोगों से आगे नजर आयेंगे लेकिन स्वयं की समस्याएँ से घिरे रह सकते हैं। नये अनुबन्धों से भविष्य में लाभ मिलेगा।

कर्क : भाग्य और कर्म एक दूसरे के पूरक हैं। बिना कर्म किये कुछ भी पा लेना सम्भव नहीं है और प्रबल भाग्य के बगैर सफलता के शिखर पर पहुँचना भी नामुकिन है। स्वयं को सुरक्षित महसूस करने से कुछ मानसिक कष्टों में कमी आयेगी।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोगों को त्वरित निर्णय लेने पड़ सकते हैं, क्योंकि होने वाली परिघटनाओं से आप आश्चर्यचकित रहेंगे। रोजी व रोजगार में अड़चने व बाधाएँ आयेंगी किन्तु सतत संघर्ष से सफलता जरूर मिलेगी। परिजनों से तालमेल बिठाने में खुद को आप असमर्थ महसूस करेंगे।

कन्या : इस सप्ताह किया गया परिश्रम सार्थक साबित होगा। जो लोग आपसे ईर्ष्या रखते हैं, उनके प्रति क्रोध न करके बल्कि उन्हें बहिष्कार करने की कोशिश करें। कार्यक्षेत्र में कई प्रकार बाधाएँ नजर आयेंगी किन्तु समझदारी से काम करने पर, वह स्वतः दूर हो जायेंगी।

तुला : इस सप्ताह कुछ लोगों को तनाव से राहत मिलेगी। पुराने ऋणों का बोझ कुछ कम होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। आप चाहेंगे किसी के लिए कुछ करने को पर समय आपका साथ नहीं देगा। निज कार्यों में किये गया परिश्रम एवं निवेश सार्थक साबित होगा।

वृश्चिक : यह सप्ताह आपको नये प्रकार के अनुभव करायेगा। आप-अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर समस्याओं का हल ढूँढ लेने में कामयाब होंगे। धैर्य के साथ स्थितियों को आकलन करें और सही समय का इन्तजार करें। आर्थिक रूप से यह समय आपके लिए अनुकूल रहेगा।

धनु : इस सप्ताह आर्थिक मामलों में थोड़ा सोंच-समझकर निवेश करने की आवश्यकता है परिश्रम से काम करेंगे तो लोग तारीफ करेंगे। व्यवसाय में नौकरो-चाकरों से सावधान रहने की आवश्यकता है। घटनायें सम्भावना के मुताबिक नहीं घटेगी। कुछ लोगों के अधिकारों में कटौती हो सकती है।

मकर : इस सप्ताह आप समस्याओं से घिरे रहेंगे किन्तु इन्हीं में से उबरने के रास्ते भी निकलने होंगे। परिश्रम से काम करेंगे तो लोग तारीफ करेंगे जिससे आपके आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी। कुछ राहत वाले कार्य होंगे जिससे मन को सुकून मिलेगा।

कुम्भ : समय के साथ-साथ आपकी जीवन शैली में भी परिवर्तन नजर आयेगा। काफी समय से जिन सूचनाओं का आपको इन्तजार था, वे शीघ्र ही प्राप्त होगी। नये लोगों को रोजगार व रोजी के अवसर उपलब्ध होंगे। नये लोगों से भेंट होगी जिससे विकास के द्वार खुलेंगे।

मीन : इस सप्ताह आपको अतीत की उलझनों से दूर होकर वर्तमान के खुशनुमा माहौल में प्रवेश करना होगा। धन की हाय-तौबा से निजात मिलेगी। लोगों के बीच अपना महत्व देखकर आप गौरवान्वित महसूस करेंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।

सर्वारम्भपरित्यागी यो मदभक्तः स मे प्रियः॥

जो पुरुष आकांक्षा से रहित, बाहर-भीतर से शुद्ध, चतुर, पक्षपात से रहित और दुःखों से छूटा हुआ है—वह सब आरम्भों का त्यागी मेरा भक्त मुझको प्रिय है॥१६॥

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।

शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥

जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है— वह भक्तियुक्त पुरुष मुझ को प्रिय है॥१७॥

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।

शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥

जो शत्रु-मित्र में और मान-अपमान में सम है तथा सरदी, गरमी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वों में सम है और आसक्ति से रहित है॥१८॥

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्।

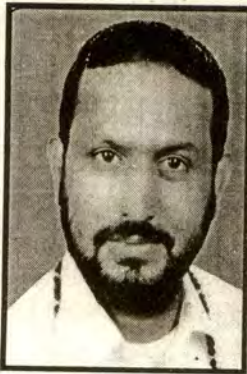
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥

जो निन्दाः स्तुति को समान समझने वाला, मननशील और जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही सन्तुष्ट है और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है— वह स्थिरबुद्धि भक्तिमान् पुरुष मुझको प्रिय है॥१९॥

अध्यक्षीय

सम्पादकीय

मोदी जी अब २० ही और बचे हैं

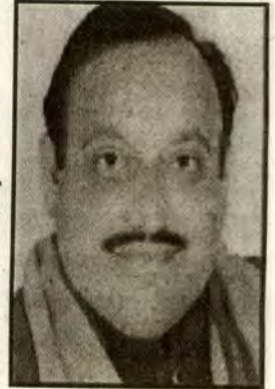


अच्छे दिन लाने का सपना दिखाने वाली मोदी सरकार चरमराती अर्थव्यवस्था को लेकर कठघरे में है। अब तो विपक्ष के साथ बीजेपी के बड़े नेता भी यही बोल रहे हैं कि देश की अर्थव्यवस्था पटरी से उतर गई है। कभी वाजपेयी सरकार में वित्त मंत्री रहे यशवंत सिन्हा ने नोटबंदी और जीएसटी जैसे फैसलों को लेकर सरकार पर सवालिया निशान खड़े कर दिए हैं। एक अंग्रेजी अखबार में लिखे लेख में यशवंत सिन्हा यहां तक बोल गए कि अरुण जेटली ने अर्थव्यवस्था का कबाड़ा कर दिया है। यशवंत सिन्हा की मानें तो नोटबंदी के फैसले ने आग में घी डालने का काम किया है। यशवंत सिन्हा ने जीएसटी लागू करने की टाइमिंग पर भी सवाल उठाए हैं। बीजेपी समर्थकों की मानें तो यशवंत सिन्हा इसलिए सरकार पर हमला बोल रहे हैं कि क्योंकि उन्हें हाशिए पर रख दिया गया है। लेकिन सवाल उठता है कि क्या यशवंत सिन्हा ने बिना किसी तैयारी के सरकार पर हमला बोला है। जी नहीं, अब सरकार इस बात को स्वीकार करे या नहीं लेकिन सच्चाई यही है कि मौजूदा अर्थव्यवस्था पटरी से उतरती दिख रही है। देश की मौजूदा वित्त वर्ष तिमाही में ५.७ निचले स्तर तक जिसे देखाकर ७.५ फीसदी की का अनुमान करना असंभव दिख रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक बीते तीन सालों में रोजगार में करीब ६० फीसदी की कमी हुई है। यशवंत सिन्हा के हमले के बाद चौतरफा घिरे वित्त मंत्री अरुण जेटली का कहना है कि नोटबंदी और जीएसटी के दूरगामी परिणाम होंगे। जेटली ने ये भी कहा कि देश में विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा है और खतरे जैसी कोई बात नहीं। लेकिन सवाल उठता है कि अगर सब कुछ ठीक है तो फिर अर्थव्यवस्था में तेजी क्यों नहीं देखने को मिल रही अगर सब कुछ पटरी पर है तो फिर देश में लाखों नौकरियां क्यों खत्म हो रही हैं। ऐसा नहीं है कि केले यशवंत सिन्हा ने अर्थव्यवस्था को लेकर अपनी ही सरकार को कठघड़े में डाल दिया है। इससे पहले बीजेपी नेता सुब्रमण्यम स्वामी भी जेटली पर हमला ल चुके हैं। स्वामी ने कहा था कि नोटबंदी को लेकर वित्त मंत्रालय ने उचित तैयारी नहीं की। और तो और उन्होंने ये भी कह डाला था कि वो जेटली से बेहतर वित्त मंत्री साबित होंगे। अगर आपको याद होगा तो २०१५ में अरुण शौरी ने भी मोदी सरकार के कामकाज की जमकर आलोचना की थी। तब शौरी ने मोदी सरकार को न सिर्फ दिशाहीन सरकार की संज्ञा दी थी बल्कि यहां तक कह दिया कि लोग अब मनमोहन सिंह के दिन याद करने लगे हैं। मोदी सरकार की नीति को लेकर पूर्व प्रधानमंत्री और अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह भी सवालिया निशान खड़े कर चुके हैं। मनमोहन सिंह की मानें तो नोटबंदी के बाद जल्दबाजी जीएसटी लागू करने के फैसले के कारण ही सारी दिक्कतें सामने आ रही हैं। आपको बता दें कि आरबीआई के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन भी अपनी किताब में इस बात का खुलासा कर चुके हैं कि उन्होंने नोटबंदी को लेकर सरकार को चेताया था। रघुराम राजन के मुताबिक उन्होंने कभी नोटबंदी का समर्थन नहीं किया और गवर्नर रहते इसके संभावित नुकसानों को लेकर सरकार को आगाह किया था। वैसे रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया अब भी ये बताने की स्थिति में नहीं है कि नोटबंदी से कितना काला धन आया या फिर कितने कालेधन को नोटबंदी में सफेद किया गया। देश में जीएसटी को लागू हुए करीब ३ महीने हो गए हैं लेकिन इसे लेकर कारोबारियों के मन में अब भी कई तरह के सवाल हैं। लोकसभा चुनाव से पहले अपनी सभाओं में नरेंद्र मोदी ने कई नारे दिए थे। उसमें से एक नारा था कि उन्हें ६० साल दिया हमें ६० महीने दो। करीब ४० महीने का समय बीत चुका है अब मोदी जी को कुछ अलग कर दिखाने के लिए २० महीने ही शेष बचे हैं।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

विकास दर की पहली फीसदी के पहुंच गई है २०१७-१८ में विकास दर ८.१ फीसदी

मुस्लिम बहुल देश बांग्लादेश में दुर्गा पूजा की धूम



हमेशा यह कहा जाता रहा है जिसने बंगाल में दुर्गा पूजा नहीं देखी, उसने क्या भारत देखा। बंगाल दस दिन सोता नहीं। सुरक्षित, निर्भय हिन्दू परिवार रातभर एक पूजा मंडप से दूसरे में जाते हैं। एक क्षेत्र के बड़े दो चार मंडप देखने में ही सात आठ घंटे जाते हैं। इस दिन कोई दायरे नहीं, भेद नहीं। कोलकाता, चाहे दक्षिण हो या उत्तर, अपने उच्च श्रेणी के दुर्गा पंडालों के लिए विश्व विख्यात है। लेकिन इन पंडालों के बाहर और उनकी ओर जाने वाले मार्गों पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बड़े-बड़े चित्र लगे होते हैं। उनके शासन में हिन्दुओं ने जिहादी मुसलमानों के भीषण आघात सहे, उन्होंने मुहर्रम के दिन दुर्गा प्रतिमा विसर्जन पर प्रतिबंध तक लगाया। मानो हिंदू भारत में नहीं बल्कि सऊदी अरब में रह रहे हों। क्या दुर्गा पूजा के दिन वे मुहर्रम पर प्रतिबंध लगाने का भी सोच सकती थीं, भला हो सर्वोच्च न्यायालय का। जिसने वह घोर साम्प्रदायिक एवं दुर्गा-पूजा विरोधी शासनादेश रद्द कर दिया। कोलकाता में हिंदू बहुसंख्या में हैं, वहां दुर्गा पूजा का अलग रूप होगा ही। पर बंगाल में हिंदू ब्राह्मण मुख्यमंत्री हिन्दू समाज की धार्मिक आस्था पर मुस्लिम वोट बैंक के लिए आघात करते हुए हिन्दू त्योहार का राजनीतिक फायदा उठाने से नहीं चूकतीं। बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यक हैं, उन पर जमाते इस्लामी तथा अन्य जिहादी दल हमले करते हैं। बंगाल में यानी पूजा के त्योहार को भोजन, मिष्ठान के साथ भारतीयों की तरह व्रत भोजन में पोहेर, इलिश, गंगा को पद्मा कहते हैं, बहुत चाव से साथ परोसी आये दिन मुस्लिम मंदिरों को तोड़ दिया जाता है। तहस नहस कर दिया जाता है। लेकिन यहां का हिंदू हिम्मत नहीं छोड़ता। माता की पूजा जारी हो रहती है। चाहे मंदिर कितनी ही बार क्यों न बनाना पड़े। भारत के हिन्दू कभी यह महसूस ही नहीं कर पाते कि हिंसक और शत्रुतापूर्ण बहुसंख्यक इस्लामी समाज में हिन्दुओं का हिन्दुओं की तरह रहना कितना कठिन और संघर्ष पूर्ण होता है। बांग्लादेश के हिन्दुओं का कहना है कि उन्हें भारत में हिन्दुओं पर जिहादी हमलों, मंदिरों के अपवित्रीकरण तथा खासकर पश्चिम बंगाल में हिंदू घरों के ध्वस्त होने के समाचारों पर विश्वास नहीं होता। हिन्दू बहुसंख्यक भारत में हिंदू पर हमले होंगे तो बांग्लादेश के हिन्दुओं को कैसा लगेगा। भारत में ममता बनर्जी तथा अन्य सेकुलर हिन्दू जब रोहिंग्या मुस्लिमों को वोट बैंक के लिए आश्रय तथा अभय प्रदान करते हैं तो बांग्लादेशी हिंदू पीड़ा पर भी बोलते हैं। बहरहाल बांग्लादेश के अनेक जिलों में दुर्गा पूजा को शानदार, तरीके से मनाया जाता है। वह वहां के जिहादी तत्वों की घृणा तथा आक्रामकता के सामने हिंदुओं की धर्मनिष्ठा और अवामी लीग सरकार द्वारा हिन्दुओं के प्रति रक्षा-भाव का परिणाम है। हालांकि दो करोड़ हिन्दू जनसंख्या तथा ३५० सदस्यों की संसद में १२ बारह, सांसद होते हुए भी एक भी कैबिनेट मंत्री हिन्दू नहीं है। पर वर्तमान स्थिति यह है कि आवामी लीग से हिन्दू राजनीतिक धारा में आगे आए हैं। बाकी कोई दल हिन्दुओं को अपना मानता ही नहीं। हिन्दुओं पर आक्रमणों में बांग्लादेशी जिहादी सबसे आगे ही हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व वाले पश्चिम बंगाल को भी उदारतापूर्वक उग्रवादी और आक्रामक इस्लामवादियों के हाथों में सौंप दिया गया है। जिसकी वजह से राज्य एक और खूनी विभाजन की ओर अग्रसर हो रहा है। बांग्लादेश की सीमा में पड़ने वाले १० जिलों की जनसंख्या कीय स्थिति में तेज गति से भारी बदलाव आया है। आधिकारिक तौर पर १९४७ में विभाजन के वक्त मुस्लिम आबादी १६ फीसदी थी, जो साल २०११ में बढ़कर २७ फीसदी हो गई। २०११ के आंकड़ों को देखते हुए कहा जा सकता है कि ४ सालों में मुस्लिम आबादी जिस तरह से बढ़ी है, वह खतरे की घंटी है। गांवों में मुस्लिमों की आबादी तेजी से बढ़ने के कारण ये मुस्लिम बहुल इलाके हो गये हैं। मुस्लिमों ने इन गांवों में रहने वाले हिंदुओं का जीना तक दूभर कर दिया है। जनसंख्या में अधिक होने के कारण मुसलमान इन गांवों में रहने वाले हिंदुओं के खेतों पर कब्जा कर लेते हैं, उनके पालतू पशुओं को चुरा लेते हैं, हिंदुओं के घरों को आग के हवाले कर दिया जाता है, हिंदू महिलाओं और बेटियों के साथ निर्दयता के साथ बलात्कार की वारदातों को अंजाम देते हैं। मुस्लिमों को राज्य प्रशासन का समर्थन मिलने के कारण इनके मदरसे और मस्जिदें भी कुकुरमतों की तरह बढ़ते ही चले जा रहे हैं, जो इस आग में घी डालने का काम बखूबी कर रहे हैं। मुसलमानों के बढ़ते अत्याचारों की वजह से इन इलाकों में एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरता, जब किसी तरह की कोई आपराधिक वारदातें न होती हों। पश्चिम बंगाल में इस्लामिक कट्टरपंथियों की हिंदुओं के खिलाफ हिंसात्मक घटनाएं दिन-ब-दिन इतनी बढ़ती जा रही हैं कि उन पर नजर रख पाना तक मुश्किल हो गया है। राज्य पुलिस का अत्यधिक राजनीतिकरण होने के कारण बहुत कम ही देखा जाता है कि मुस्लिमों के खिलाफ हिंदुओं द्वारा की जानी वाली शिकायत तक भी दर्ज की जाती हो। दुर्गा शक्ति और सुख की प्रदाता हैं। दुर्गा अष्टमी और दशहरा सबको सुख, वैभव दे तथा आतंकवादी, जिहादियों के कहर से सम्पूर्ण उपमहाद्वीप के हिन्दू मुक्त हों तभी दुर्गा पूजा सार्थक होगी।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

नवरात्रों के समय, भव्य और शानदार मनाते हैं। उत्तर नहीं रखते। उनके यानी पद्मा नदी यहां की हिलसा मछली जाती है। बंगाल में कट्टरवादियों द्वारा

आज की भोगवादी विकृति के कारण हर आदमी प्रतिस्पर्धा में जी रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ ने व्यक्ति की

मानसिक तनाव दूर करें—'ज्ञान मुद्रा से'

डॉ. रणवीर सिंह



दिनचर्या को नष्ट करके अकेला पैसा कमाने की धुन ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य बना दिया है। साथ ही एकला चलो की फूट भरी नीति ने सामाजिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करके सामूहिक परिवार की बहुउद्देशीय प्रणाली को रूढ़िवादी करार देकर स्वार्थ की पराकाष्ठा मिया बीबी दो जने किसको पीस और चने को जीन का परम उद्देश्य गेहूँ

स्वीकार कर लिया अर्थात् संयुक्त परिवारों का तेजी से विघटन होकर एकल परिवार होना भी मानसिक तनावों का एक कारण है क्योंकि संयुक्त परिवारों में घर के सब काम अन्य सदस्यों पर बंटे हुए थे। इस कारण मानसिक तनाव नगण्य थे। किन्तु आज एक व्यक्ति पर ही सब जिम्मेदारी होने के कारण तनाव होना स्वाभाविक ही है। फिर सामाजिक प्रतिष्ठा की

धुन इन तनावों को और बढ़ा देती है। पैसा कमाने की धुन ने मनुष्य की नींद हराम कर दी है उसे भोजन तक का समय नहीं मिलता। आज का इंसान भौतिक पदार्थों में सुख और आनंद की खोज करना चाहता है। किन्तु सुख और आनन्द तो परमात्मा के सान्निध्य से ही प्राप्त हो सकता है। अनश्वर पदार्थों में ऐसी सामर्थ्य कदापि नहीं है। इस कारण हमारे ऋषि-महर्षियों ने संयम को प्रधानता दी है वेद में कहा—

'तेन व्यक्तेन भुज्जीया मा कस्य सिद्धनम्'

अर्थात् संसार की चीजों का त्यागपूर्वक उपभोग करो। कर्मों में शंका न करो। तो आइए सुख और आनन्द प्राप्ति हेतु मानसिक द्वन्द्वों से छुटकारा पाने के लिए ऋषि-महर्षियों ने सुखी जीवन जीने का जो योग मार्ग दर्शाया है

उसका तनिक सा अभ्यास करें। हम मानसिक तनाव दूर ही नहीं कर सकते बल्कि मोक्ष और ईश्वर की प्राप्ति भी कर सकते हैं। जो मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है। महर्षि पतंजलि ने योग की परिभाषा योगश्चावृत्ति निरोधः अर्थात् की वृत्तियों का निरोध ही योग है। इसलिए मानसिक तनाव हमारे तन की चंचलता स्वरूप उत्पन्न विकार है जिनका निर्वाह केवल योग के द्वारा ही संभव होगा। यह मन वायु से भी अधिक गतिमान है।

ऋषि-महर्षियों का मामूली सा प्रयोग भी बहुत गहरा विज्ञान होता है। किन्तु हम भारतीयों को इस ज्ञान को रूढ़िवादी बताकर उससे विमुख कर दिया जाता है। फिर उसी ज्ञान को अपनी निजी खोज बताकर परावर्तित करके नोबल पुरस्कार जीत जाते हैं। इस

पश्चिमी सोच को अब जानकर सावधान होना होगा।

आयुर्वेद ने समस्त मानव रोगों का मूल कारण वातपित्त, कफ की विषमावस्था बताई है। मनुष्य ही नहीं यह समस्त सृष्टि पंच नैतिक तत्त्वों से निर्मित है। ये पंच भौतिक तत्त्व ही सब रोगों का उपचार है। परमात्मा ने मनुष्य के हाथ में पाँच तत्त्वों को समाविष्ट किया है। यदि हम कहें पूरा अस्पताल मानव के हाथ में परमात्मा ने दे दिया है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। मनुष्य के हाथ का अंगूठा अग्नि तत्त्व का द्योतक है। तर्जनी (अंगूठे के पास वाली) अंगुली वायु तत्त्व है। मध्यमा आकाश अनामिका पृथ्वी तत्त्व तथा कनिष्ठा तत्त्व की द्योतक है। इन अंगुलियों को विभिन्न क्रम में मिलाने से अनेक प्रकार की हस्तमुद्राएँ बनती हैं जिनका थोड़ी देर अभ्यास करके मानव के असाध्य रोगों का उपचार हो सकता है। जितने भी मानसिक क्रियाकलाप

शेष पृष्ठ 11 पर

गोपाष्टमी के दिन गोपूजन कार्यक्रम का स्वरूप

१. प्रथम दिन ही सप्तमी को ग्रामवासियों से गोपाष्टमी के दिन प्रातः प्रभातफेरी तथा गोपूजन में आने हेतु पीले चावल वितरित कर दें और गोपूजन के लिये आठ सपत्नीक गोभक्त यजमानों का पंजीयन कर दें तथा यजमानों को प्रातः प्रभातफेरी के बाद स्नान कर स्वच्छ वस्त्र (भारतीय वेश-भूषा) धारण करके गोपूजन में आने का समय बता दें साथ ही गांव के आठ गोपालकों को सुलक्षणा सवत्सा गोमाता को स्नान-श्रृंगारादि करवाके गवाड़ में शोभत्यात्रा में आने का आमन्त्रण दें।

२. गोपाष्टमी के दिन प्रातः ब्रह्म वेला में 'सुरभि-संकीर्तन-प्रभातफेरी' गांव तथा नगर बाड़ों के मुख्य मार्गों पर निकाले जिसमें "जय गोमाता जय गोपाल। भक्तवत्सल प्रभु दीनदयाल।" का उच्चस्वर में सामूहिक कीर्तन करते हुए प्रभातफेरी गांव के गोष्ठ व गवाड़ तक जाय जहाँ गोपूजा होनी है, पुनः सभी जन मिलकर गोष्ठ में गोवंश की सेवा अपने हाथ से को और केवल गवाड़ हो तो उसकी सफाई करके, जल का छिड़काव कर तथा सप्त गोमाता एवं एक नन्दीदेवता के उपस्थित रहने के स्थान को सीमांकित व रंगोली से सुसज्जित करना तथा वर्गाकार रूप में गोमाताओं के खूँटे रोपकर उनको पीला या सफेद वस्त्र से आवेष्टित करके गोपूजा की तैयारी करें।

३. कुछ कार्यकर्ता तथा मार्गदर्शक गोष्ठ अथवा गवाड़ में पूजास्थान पर रहकर अन्य तैयारी करें। शेष लोना अपने-अपने घर में जाकर स्नानादि करके गोपूजा तथा गोग्रास की सामग्री लेकर गोमाताओं को आगे करके शोभायात्रा के साथ पुनः गवाड़ में पूजा स्थल पर पहुँचकर निर्दिष्ट स्थान पर विराजमान हो जाय, गोमाताओं को यथास्थान खूँटों से रस्सी द्वारा स्थापित कर दें तथा अपनी-अपनी गोमाता के पास गोपालक विराजमान रहे।

४. गवाड़ में खूँटों के मास हरा-सूखा चारा, सेंधा नमक, स्वच्छ जल तथा मीठा दलिया अलग-अलग पत्रों में पधरा दिया जाय, एक खाली पात्र भी सामने स्थापित कर दें तथा पूर्व पंजीकृत आठों सपत्नीक गोभक्त यजमानों के लिए प्रत्येक गोमाता के सामने थोड़ी दूरी पर एक जोड़ा आसन बिछाकर बैठा दें और यजमानों को मोली बाँधकर, तिलक-आचमन कराके प्रत्येक गोभक्त दम्पती के द्वारा गोपालकों का तिलक आदि से पूजन करावें, उसके बाद उपस्थित सभी गोभक्तों को गोमहिमा का श्रवण करावें (जो इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या १५ पर है) फिर विधिवत् क्रम से गोमाता का सर्वांग पूजन प्रारम्भ करें। पूजनविधि सम्पन्न होने के बाद प्रनः गोभक्त यजमान जोड़े हस्त-प्रक्षालन करके पूर्व निर्धारित स्थान पर विराजित हो जायें। विधिवत् गोपूजन सम्पन्न

करवाके उनके द्वारा अपने घर से लाये हुए ११ किलो अनाज एक स्वच्छ पात्र में रखा हुआ हो, जिसे गोपूजा के बाद गो-सहस्रार्चन में गोमाता के



सामने खाली पात्र में प्रत्येक मन्त्र के साथ लगभग २० ग्राम की आहुति देते रहना है।

५. अब पुनः आचमन-६ यान-संकल्पादि करके पुरोहितजी भी के ३०८ नामों है गोअर्चन सम्पन्न करावें पुनः ३००८ बार 'श्रीसुरभ्यै नमः' मंत्र का उच्चस्वर है उच्चारण करते हुए यजमानगण के द्वारा प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'पूजयामि' का उच्चारण करवाते हुए यजमान के घर से लाये गये अनाज की आहुतियाँ गोमाता के लिये समर्पित करावें। अन्त में निम्नोक्त मन्त्र का सामूहिक उच्चारण करते हुए प्रार्थनापूर्वक अर्चन सम्पन्न करें—

'तृणोदकाद्येषु वनेषु मत्ताः क्रीडन्तु गावः सवृषाः सवत्साः।'

क्षीरं प्रमुञ्चन्तु सुखं स्वपन्तु शीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः।।

गौ उत्तम गोग्रास पाती रहें और हम सब उनके आशीर्वाद है

भाग्यवान् बनें। हे अवध्य गौ! तू सदा घास खा और घूमती हुई शुद्ध जल पी।। वृष और बछड़े-बछड़ियों के सहित गौएँ अत्यन्त प्रसन्न होकर क्रीडा करें। वनों है स्वतन्त्र भ्रमण करते हुये हरे-भरे तृण और स्वच्छ जल का यान करें। दुग्धरूपी अमृत प्रदान करें एवं शीत, प्रचण्ड धूप। व्याधि और सब प्रकार के भय से विमुक्त होकर सुखपूर्वक शयन करें।

६. फिर सभी यजमान थाली में सजायी हुई आरती लेकर खड़े हो जाय, पुरोहितजी के संकेतानुसार सामूहिक आरती का गायन करे और आरती पूर्ण करके पुष्पांजलि अर्पित करें, उसके बाद गोपालक अपनी-अपनी गोमाता के चारों चरणों के नीचे से एक-एक मुट्ठी रज

यजमान के दुपट्टे में प्रसाद रूप से प्रदान करें, इस तरह से प्राप्त गोरज सभी यजमानगण गोसेवा-समिति द्वारा उपलब्ध थैली में संगृहीत कर लें, तदुपरान्त उपस्थित सभी गोभक्त भाई-बहन और बालक-वृद्ध भी पुष्पांजलि अर्पित कर गोग्रास समर्पण करें, फिर सभी भक्तिबद्ध होकर गोमाता का सेकीर्तन करते हुए सात परिक्रमा करें, पश्चात् सभी सामूहिक जयघोष करके निम्नलिखित गोरश की प्रतिज्ञा करें।

रक्षिष्याम्यनिशं

धेनुमर्विष्याम्यखिलार्थदाम्। गो चिन्तयिष्यामि वन्दे धेनुं

स्वमातरम्।।१।।

धेनूनां रक्षणार्थाय नैजं दास्याम मुदा। धेनुष्वेव भवेद् भक्तिवन्दे

धेनुं स्वमातरम्।।२।।

धेन्वर्थं मे धनं धन्यं धेन्वर्थं जीव महत्। पुण्यमात्मार्षणं मन्ये व

धेनुं स्वमातरम्।।३।।

मैं अपनी माता गौ प्रणाम करता हूँ और प्रतिज्ञा लेता कि दिन-रात निष्ठापूर्वक जामात की रक्षा करूँगा, सभी पुरुषार्थों का प्रदान करने वाली गोमाता का पूजन-अपनि करूँगा और सतत गोवंश-संवर्द्धन के लिये ही चिन्तन करता रहूँगा।। १।।

मैं अपनी माता गौ को प्रणाम करता हूँ और प्रतिज्ञा लेता हूँ कि उनके लिये प्रसन्नचित है अपना सर्वस्व समर्पण कर दूँगा। अतः गोमाता के पावन चरणों में दिन-प्रतिदिन भक्ति की

शेष पृष्ठ 10 पर



भारत की विविध संस्कृति का एक अहम अंग यहां के पर्व हैं। भारत में ऐसे कई पर्व हैं जो बेहद कठिन माने जाते हैं और इन्हीं पर्वों में से एक है छठ पर्व। छठ को सिर्फ पर्व नहीं महापर्व कहा जाता है। चार दिनों तक चलने वाले इस पर्व में व्रती को लगभग तीन दिन का व्रत रखना होता है जिसमें से दो दिन तो निर्जली व्रत रखा जाता है। आइए आज के इस अंक में जानें छठ के बारे में कुछ विशेष बातें और छठ व्रत कथा।

क्या है छठ

छठ पर्व षष्ठी का अपभ्रंश है। कार्तिक मास की अमावस्या को दीवाली मनाने के तुरंत बाद मनाए जाने वाले इस चार दिवसीय व्रत की सबसे कठिन है और महत्वपूर्ण रात्रि कार्तिक शुक्ल षष्ठी की होती है। इसी कारण इस व्रत का नामकरण छठ व्रत हो गया।

छठ व्रत कथा

मार्कण्डेय पुराण में इस बात का उल्लेख मिलता है कि सृष्टि की अधिष्ठात्री प्रति देवी ने अपने आप को छह भागों में विभाजित किया है और इनके छठे अंश को सर्वश्रेष्ठ मातृ देवी के रूप में जाना जाता है, जो ब्रह्मा की मानस पुत्री और बच्चों की रक्षा करने वाली देवी हैं। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को इन्हीं देवी की पूजा की जाती है। शिशु के जन्म के छह दिनों के बाद भी इन्हीं देवी की पूजा करके बच्चे के स्वस्थ, सफल और दीर्घ आयु की प्रार्थना की जाती है। पुराणों में इन्हीं देवी का नाम कात्यायनी मिलता है, जिनकी नवरात्र की षष्ठी तिथि को पूजा की जाती है।

सीता जी ने भी रखा था छठ व्रत

माना जाता है कि छठ पर्व बहुत ही पुराना है। इसका वर्णन रामायण काल से लेकर

महाभारत काल तक में होता है। किंवदंति के अनुसार ऐतिहासिक नगरी मुंगेर के सीता चरण में कभी मां सीता ने छह दिनों तक रह कर छठ पूजा की थी। पौराणिक कथाओं के अनुसार 98 वर्ष वनवास के बाद जब भगवान राम अयोध्या लौटे थे तो रावण वध के पाप से मुक्त होने के लिए ऋषि-मुनियों के आदेश पर राजसूर्य यज्ञ करने का फैसला लिया। इसके लिए मुगदल ऋषि को आमंत्रण दिया गया था, लेकिन मुगदल ऋषि ने भगवान राम एवं सीता को अपने ही आश्रम में आने का आदेश दिया। ऋषि की आज्ञा पर भगवान राम एवं सीता माता



स्वयं यहां आए और इसको पूजा-पाठ के बारे में बताया गया। मुगदल ऋषि ने मां सीता को गंगा छिड़क कर पवित्र किया एवं कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष षष्ठी तिथि को सूर्यदेव की उपासना करने का आदेश दिया। यहीं रह कर माता सीता ने छह दिनों तक सूर्यदेव भगवान की पूजा की थी। छठ पूजा के इतिहास की ओर दृष्टि डालें तो इसका प्रारंभ महाभारत काल में कुंती द्वारा सूर्य की आराधना व पुत्र कर्ण के जन्म के समय से माना जाता है।

छठ क्यों है महापर्व

छठ को महापर्व इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि सूर्य ही एकमात्र प्रत्यक्ष देवता हैं और छठ पूजा का वर्णन पुराणों में भी मिलता है। अथर्ववेद में छठ पर्व का उल्लेख

छठ महापर्व की महिमा

मुन्ना कुमार शर्मा

है जो इसकी महानता और प्राचीनता को दर्शाता है। यह एकमात्र पर्व है जिसमें उदयमान सूर्य के साथ-साथ अस्ताचलगामी सूर्य को भी अर्घ्य दिया जाता है। यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि जीवन में हमें सिर्फ उन्हें ही सम्मान नहीं देना चाहिए जो आगे बढ़ते हैं बल्कि समय आने पर उनका भी साथ देना चाहिए जो हमसे पीछे छूट गए हैं या जिनका महत्व कम हो गया हो।

कैसे रखा जाता है व्रत

यह पर्व चार दिनों का है। व्रती पहले दिन संध्या नमक और घी से बनी कढ़ू की सब्जी और अरवा चावल प्रसाद के रूप में खाते हैं। अगले दिन से उपवास आरंभ होता है। इस दिन को खरना कहते हैं। रात में खीर बनती है। व्रतधारी रात में यह प्रसाद लेते हैं। इस पर्व में पवित्रता का ध्यान रखा जाता है। इस दौरान लहसुन, प्याज खाना वर्जित है। जिन घरों

लोग गुड़ से खीर बनाते हैं वह भी बखीर ही मानी जाती है) बनाकर देवकरी में पांच जगह कोशा (मिट्टी के बर्तन) में बखीर रखकर उसी से हवन किया जाता है। बाद में प्रसाद के रूप में बखीर का ही भोजन किया जाता है व सगे संबंधियों में इसे बांटा जाता है। इस दिन का प्रसाद यानि खीर और रोटी बेहद स्वादिष्ट और सेहतमंद होता है। षष्ठी यानि बड़का छठ के दिन सुबह से ही नदी या तालाबों के घाटों को सजाने-संवारने का काम शुरू हो जाता है। केले के थम्ब, आम के पल्लव, अशोक के पत्ते को मूँज की रस्सी के साथ बांधकर पूरे व्रत स्थल की सजावट करते हैं। व्रत सामग्री में खासकर बांस से बने दऊरा-सुपली, ईख, नारियल, फल-फूल, मूली, पत्ते वाले अदरक, बोरो, सुथनी, केला, आटे से बने ठेकुआ आदि होते हैं जिन्हें एक लकड़ी के डाले में रखा जाता है जिसे लोग दऊरा या ढलिया या बंहगी भी कहते हैं।

छठ का गीत

शाम के अर्घ्य के दिन दोपहर बाद से ही बच्चे, महिलाएं, बुजुर्ग और नौजवान नए वस्त्रों में सुशोभित होकर घाट की ओर प्रस्थान करते हैं। घर के पुरुष

सिर पर चढ़ावे वाला दऊरा लेकर आगे-आगे चलते हैं। पीछे-पीछे महिलाएं गीत गाती व्रत स्थल को जाती हैं। वहां पहुंचकर पहले गीली मिट्टी से सिरोंपता बनाती हैं। अक्षत-सिंदूर, चंदन, फूल चढ़ाकर वहां एक अर्घ्य रखकर छठी मझ्या की सांध्य पूजा का शुभारम्भ करती हैं। फिर व्रती नदी में पश्चिम की ओर मुंह करके खड़े होते हैं और भगवान दिवाकर की आराधना करते हैं।

वैसे तो लोग इस दिन घाट पर अपनी मर्जी और सामर्थ्य से फल ले जाते हैं लेकिन विधि व्रत रूप से एक सूप में नारियल कपड़े में लिपटा हुआ नारियल, पांच प्रकार के फल, पूजा का अन्य सामान ही काफी होता है। शाम को पूजा करने के बाद घर वापस आया जाता है और अगली सुबह की तैयारी की जाती है। अगले दिन सुबह-सुबह सूर्य निकलने से पहले ही घाट पर पहुंचा जाता है और भगवान सूर्य के निकलते ही उन्हें अर्घ्य दिया जाता है। इसके बाद वहीं पर प्रसाद ग्रहण कर व्रत को तोड़ा जाता है और भगवान सूर्य को यह व्रत रखने की क्षमता प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया जाता है।

गौवंश का आहार भूसा बचाओ

जाँ देखौ ताँ लगे हैं, अबै भूसा के ढेर।
भूसा धरौ बंदेज सें, करौ न तनकउ देर।।
डंडासागर घरन में, भूसा खूब घर लेव।
पालौ अपने ढोर सब, बनैं और खों देव।।
लावारिस गौधन चरै, मिलजुर भूसा डराव।
भूसा बनाऔ खूब तुम, बेंचौ दाम बनाव।।
कभउँ अरवारत जाय ना, करौ भूसा को मान।
गौधन की आशीष सें, खुशी रैयँ भगवान।।
सबइ किसानन सें विनय, राय भूसा कौ मान।
आगी पानी सें बचै, दइयौ पूरौ ध्यान।।
जैसइ अपनौं अन्न है, जीवे कौ आधार।
ऊसउ पशुधन खौं भूसा, उनकौ पालनहार।
गौशालन खौं जो बनैं, करौ भूसा कौ दान।
गौधन की आशीष सें, सब जग कौ कल्याण।।
आग लगै ना खेत में, डटुआ भूसा बचाव।
धरती की आशीष लो, दूद मलीदा खाव।।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 की चर्चा आम तौर पर होती ही रहती है। लेकिन आजकल कुछ ज्यादा ही हो रही है क्योंकि एक और अनुच्छेद 354 उसके पिछवाड़े में पकड़ा गया है, जिसके बारे में अब विधि विशारद कह रहे हैं कि वह भी अनुच्छेद 370 के कारण ही अवतरित हो सका है। लेकिन एक बात समझ से परे है कि भारत का संविधान अधिकृत रूप से छापने वाले विधि मंत्रालय ने उसे इतने लम्बे अरसे तक यत्नपूर्वक पिछवाड़े में छिपा कर क्यों रखा? परन्तु इससे एक लाभ भी हुआ है। इस पुनः उभरे विवाद के कारण एक बार फिर अनुच्छेद 370 की जामा तलाशी शुरू हो गई है। इस जामा तलाशी में इस अनुच्छेद के अन्दर काफी मात्रा में बेकार हो चुका सामान मिला है, जिसको लेकर स्वच्छता अभियान के लोग उत्साह में आए हैं लेकिन जम्मू कश्मीर के बकरा दल ने भी अपने सींग तीखे करने शुरू कर दिए

लेकिन इस वकृत संघीय संविधान में अनुच्छेद 232 के नाम से कोई अनुच्छेद मौजूद ही नहीं है। बहुत साल पहले यह अनुच्छेद भारत के संविधान में विद्यमान होता था लेकिन बाद में संविधान संशोधन की प्रक्रिया के तमाम विधि विधान को अपना कर उस अनुच्छेद को संविधान में से हटा दिया गया। संघीय संविधान में से अनुच्छेद 232 के विलुप्त हो जाने के बाद अनुच्छेद 370 (9)(A) अपने आप ही अप्रासांगिक हो जाता है। जब संविधान में कोई अनुच्छेद है ही नहीं तो उसके जम्मू कश्मीर में लागू होने या न होने का प्रश्न ही कहाँ बचता है? अनुच्छेद 232 के मृत हो जाने या संविधान में से उसकी छुट्टी कर दिए जाने के बाद अनुच्छेद 370 की इस घोषणा का कोई अर्थ नहीं रह जाता कि अनुच्छेद 232 जम्मू कश्मीर पर लागू नहीं होगा। कायदे से अनुच्छेद 370 के इस भाग को भी हटाना चाहिए था क्योंकि सजीव अनुच्छेद 370 का अब यह निर्जीव अंश

बारे में राष्ट्रपति ने यह घोषणा कर दी हो कि ये विषय उन विषयों के अनुसार ही हैं जिन पर, रियासत ने भारत डोमीनियन में विलय होते समय, डोमीनियन विधानमंडल को विलय पत्र में कानून बनाने का अधिकार दिया गया था। इस अनुच्छेद की भाषा से ही स्पष्ट है कि स्थिति 26 जनवरी 1950 से पहले की थी। 26 जनवरी 1950 के बाद भारत डोमीनियन समाप्त हो गया और उसके स्थान पर वैधानिक दृष्टि से भारत गणतंत्र प्रकट हो गया।

दल कबाड़ संभाले रहने को ही दर्जा खास मान रहे हैं?

लेकिन अभी अनुच्छेद 370 की आत्मा तक पहुँचना तो बाकी है। इस अनुच्छेद में जम्मू कश्मीर सरकार पर बहुत भारी जिम्मेदारियाँ आयद की गई हैं। इसलिए बाकायदा स्पष्टीकरण दिया गया है कि आखिर जम्मू कश्मीर सरकार से क्या अभिप्राय है, इसकी व्याख्या भी की गई है। यह व्याख्या निम्नानुसार है, *For the purpose of this article the Government of the State means the person for the time*

अनुमोदित करने का प्रश्न शेष बचता है और न ही राष्ट्रपति द्वारा उसको स्वीकृति देने का। अब राज्य में राज्यपाल का पद है और राज्यपाल की नियुक्ति उसी प्रकार होती है जिस प्रकार किसी भी अन्य राज्य के राज्यपाल की नियुक्ति होती है। इसलिए अनुच्छेद 370 में दी गई राज्य सरकार की पूरी परिभाषा ही अप्रासांगिक हो जाती है। परन्तु फिर भी यह परिभाषा अनुच्छेद से उसी प्रकार चिपकी हुई है जिस प्रकार बंदरिया का मरा हुआ बच्चा भी उसके

अनुच्छेद 370 के मृतक अंगों को बाहर निकालना

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री



हैं। उसका कहना है कि अनुच्छेद 370 के अन्दर से यह कूड़ा निकाला गया तो जम्मू कश्मीर की स्वायत्तता और उसका विशेष दर्जा खतरे में पड़ जाएगा। लेकिन तीखे हो रहे सींगों के बीच भी अनुच्छेद 370 के खोल में छिपे बेकार सामान की शिनाख्त करना लाजिमी हो गया है ताकि यह निरीक्षण ही हो सके कि इस सामान का कश्मीर के दर्जा-ए-खास से ताल्लुक है भी या कुछ लोगों ने अपनी राजनैतिक कांगड़ी गर्माए रखने के लिए शोर मचाना शुरू किया है।

संस्कृत में कहावत है प्रथम ग्रासे मक्षिका अर्थात् पहले कौर में ही मक्खी आ गई। यही स्थिति अनुच्छेद 370 की है। इस अनुच्छेद के पहले वाक्य (370(9)(A) के अनुसार जम्मू कश्मीर पर संघीय संविधान का अनुच्छेद 232 लागू नहीं होगा।

मात्र बन गया है। लेकिन यह निर्जीव अंश अभी तक भी सजीव भाग से मजबूती से चिपका हुआ है और यदि कोई संशोधन करके इस मृत अंग को बाहर निकालने की बात करता है तो श्रीनगर के लाल चौक में पटाखे छूटने लगते हैं कि इससे जम्मू कश्मीर का तथाकथित विशेष दर्जा खतरे में पड़ जाएगा।

इसी प्रकार अनुच्छेद 370 के दूसरे भाग (9)(इ) की जाँच पड़ताल से भी हैरानकुन तथ्य सामने आते हैं। इस अंश की भाषा कालबाह्य हो गई है। अनुच्छेद 370(9)(इ)(प) के अनुसार जम्मू कश्मीर राज्य के लिए कानून बनाने की संसद की शक्ति सीमित कर दी गई है। इसके अनुसार संसद जम्मू कश्मीर के लिए संविधान की संघ सूची और समवर्ती सूची के केवल उन विषयों पर कानून बना सकती है, जिनके

जम्मू कश्मीर अब भारत डोमीनियन का हिस्सा नहीं बल्कि भारत गणतंत्र का अंग है। इसलिए अनुच्छेद 370 के इस खंड की भाषा पूरी तरह बदलने की जरूरत है। इसमें सीधे सीधे उन विषयों का उल्लेख किया जा सकता है, जिन पर संघीय संसद को कानून बनाने का अधिकार है। चाहे ये विषय विलय पत्र से अक्षरक्ष ही क्यों न उठा लिए जाएँ। अब न तो भारत डोमीनियन विद्यमान है और न ही डोमीनियन विधानमंडल, लेकिन अनुच्छेद 370 अभी भी डोमीनियन की जमीन पर ही पैर अंगद की तरह पैर जमाए हुए है। सारा देश 26 जनवरी 1950 को भारत डोमीनियन की विदेशी खाल उतार कर भारत गणतंत्र के अपने प्राचीन मूल रूप में प्रकट हो गया था। जम्मू कश्मीर ने भी ऐसा ही किया था। उसके राजप्रमुख ने भी अन्य राजप्रमुखों की तरह राज्य द्वारा संघीय संविधान को अपनाने की अधिसूचना जारी की थी। उसके बाबजूद अनुच्छेद 370 का यह अंश 2017 में भी अपने उसी पुराने लिवास में जम्हाई ले रहा है। लेकिन इस भाषा को बदलने की बात तो दूर, यदि इसके आसपास भी कोई देख लिया जाता है तो सोनिया कांग्रेस से लेकर शेख अब्दुल्ला का पूरा कुनबा चिल्लाने लगता है कि इससे राज्य का दर्जा-ए-खास खतरे में पड़ जाएगा। जबकि जम्मू कश्मीर का अवाम भी पूछने लगा है कि क्या राज्य के ये राजनैतिक

being recognized by the President on the recommendation of the Legislative Assembly of the State as the Sadr Riyasat of Jammu and Kashmir] acting on the advice of the Council of Ministers of the State for the time being in office. इसका अर्थ हुआ कि राज्य की विधान सभा द्वारा अनुमोदित जिस व्यक्ति को राष्ट्रपति उस समय जम्मू कश्मीर का सदर-ए-रियासत स्वीकार करेंगे, राज्य की मंत्री परिषद की सलाह पर कार्य करता हुआ वह व्यक्ति उस समय, राज्य की सरकार माना जाएगा।

जम्मू कश्मीर सरकार की यह व्याख्या 1950 में समझ आ सकती थी। उस समय प्रावधान यह था कि जम्मू कश्मीर की विधान सभा सदरे रियासत के पद पर नियुक्ति के लिए राष्ट्रपति को नाम प्रस्तावित करती थी। यदि राष्ट्रपति उस नाम को स्वीकृति दे देते तो वह व्यक्ति सूबे का सदरे रियासत नियुक्त कर दिया जाता था। उस व्यक्ति के लिए लाजिमी था कि वह अपनी मंत्रिपरिषद की सलाह से कार्य करेगा। लेकिन बाद में यह सारी व्यवस्था समाप्त हो गई। जम्मू कश्मीर के अपने संविधान अधिनियम 1954 में ही राज्य की विधान सभा में अनेक संशोधन कर नई व्यवस्थाएँ लागू कर दी। अब राज्य में सदर-ए-रियासत का कोई पद नहीं है। इसलिए राज्य की विधान सभा द्वारा न तो इस पद के लिए किसी को

साथ चिपका रहता है। पंजाबी में एक कहावत है, जिधर गईयां बेड़ियाँ उधर गए मल्लाह। अर्थात् जिधर किशतियाँ चली गई उसी तरफ मल्लाह चले गए। अब न राजा रहे न महाराजा, न सदरे रियासत रहे न रियासतें। लेकिन भारतीय संविधान का यह अनुच्छेद अभी भी वहाँ खड़ा पुराना राग अलाप रहा है।

भीमराव अम्बेडकर भारतीय संविधान को जीवन्त दस्तावेज कहते थे। संविधान कोई अजायबघर नहीं है जिसमें टूटी फूटी चीजों को संभाल कर रखा जाता है। न ही यह चंडीगढ़ में बनाया गया टेक चन्द का राक गार्डन है जिसे केवल टूटी फूटी चीजों से ही बनाया और सजाया गया हो। फिर अनुच्छेद 370 के अन्दर कालक्रम से प्राणहीन हो चुके शब्द और अर्थ क्यों नहीं हटाए जा सकते? आम्बेडकर तो यह भी मानते थे कि भविष्य की पीढ़ियों पर हम अपने आप को थोप नहीं सकते। वे अपने लिए अपनी जरूरतों के मुताबिक उपबन्धों की व्यवस्था कर सकते हैं और उन्हें यह करने का पूरा अधिकार है। इसीलिए उन्होंने संविधान की प्रस्तावना में समाजवाद डालने से इन्कार कर दिया था। उनका तर्क था मैं देश की आने वाली सन्तानें पर एक खास विचारधारा कैसे लाद सकता हूँ? लेकिन अनुच्छेद 370 का मामला इसके बिल्कुल विपरीत है।

शेष पृष्ठ 11 पर



२०१४ में जब नरेन्द्र मोदी पूर्ण बहुमत लेकर सत्ता में आए, तो सारी दुनिया के हिंदुओं ने खुशी मनाई कि लगभग १००० साल बाद भारत में हिंदू राज की स्थापना हुई है। नरेन्द्र भाई का व्यक्तिगत जीवन आस्थावान रहा है। हिमालय में तप करने से लेकर भारत की सनातन परंपराओं के प्रति उनकी आस्था ने भारत को हिंदू राष्ट्र बनने की संभावनाओं को बढ़ा दिया। पर आज हिंदू राष्ट्र का सपना संजोने वाले बहुत से गंभीर वृत्ति के लोग भारत के विकास की दशा और दिशा को देखकर चिंतित हैं। इनमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से सहानुभूति रखने वालों से लेकर,

संघ से अलग रहने वाले हिंदूवादी तक शामिल हैं। उन्हें लगता है कि जिस दिशा में मोदी जी बढ़ रहे हैं, ये वो दिशा नहीं, जिसका सपना उन्होंने देखा था। इन लोगों की मजबूरी यह है कि ये स्वयं राजनीतिक सत्ता हासिल करने में न तो सक्षम हैं और न ही उनकी महत्वकांक्षा है। ये तो वो लोग हैं जो इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि कोई सत्ताधीश इनकी पीड़ा को समझकर, अपने बलबूते पर इनके विचारों को नीतियों में लागू करें। ऐसी परिस्थितियां प्रायः नहीं बना करतीं, अब बनी हैं, तो समय निकला जा रहा है और कोई दूरगामी ठोस परिणाम आ नहीं रहे। इसलिए इनकी चिंता

स्वभाविक है।

दूसरी तरफ प्रधानमंत्री के पद की भी कुछ सीमाएं होती हैं। राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय दबाव, सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक परिस्थितियां चाह कर भी प्रधानमंत्री को बहुत से कदम नहीं उठाने देतीं। समस्या तब खड़ी होती है, जब जो संभव है, वो भी नहीं होता और जो कुछ हो रहा होता है, वह अपेक्षाओं के विपरीत होता है। उदाहरण के तौर पर दिल्ली की एक जानी-मानी महिला बुद्धिजीवी जो अंग्रेजी में अपने लेख और शोधपत्रों के

हम सारी जिंदगी कम्युनिस्टों को कोसते रहे। भाजपा से तो कम्युनिस्ट कहीं बेहतर थे, उन्होंने ऐसे चयन में योग्यता की उपेक्षा प्रायः नहीं की। यही कारण है कि भारत की राजनीति में वे अल्पसंख्यक होते हुए भी आज तक इतने प्रभावशाली रहे हैं कि उन्होंने भारत के मीडिया व अकादमिक क्षेत्र को प्रभावित किया। जबकि मौजूदा सरकार द्वारा नियुक्त हिंदूवादी व्यक्ति, जिस संस्था में भी जा रहे हैं अपने अधकचरे ज्ञान और अपरिपक्व स्वभाव के कारण

क्यों हम जैसे राष्ट्रप्रेमी और सनातन धर्मप्रेमियों के अच्छे सुझाव भी प्रधानमंत्री के कानों तक नहीं पहुंचते। हमारी समस्या यह है कि पिछली सरकारों से हम हिंदू संस्कृति के लिए इसलिए बहुत कुछ ठोस नहीं करवा पाए क्योंकि वे धर्मनिरपेक्षता के चश्मे के बाहर देखने को तैयार नहीं थीं। जबकि भाजपा की मौजूदा सरकारें अपनी लक्ष्मण रेखा के बाहर नहीं देखना चाहतीं। लक्ष्मण रेखा के भीतर माने भाजपा व संघ परिवार के बारह उन्हें न तो कोई हिंदूवादी दिखता है और न ही योग्य। सत्ता

हिंदू राष्ट्र का सपना क्या अधूरा रहेगा?

विनीत नारायण

माध्यम से गत ३५ वर्षों से हिंदू विचारधारा की प्रबल प्रवक्ता रही हैं, उनके स्वनामधन्य पिता देश के सबसे प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक के वर्षों संपादक रहे और वे भी जीवन के अंतिम दशक में कट्टर हिंदूवादी हो गये थे, आज ये महिला मौजूदा सरकार से खिन्न है।

इनकी शिकायत है कि हिंदुत्व के नाम पर मोदी सरकार में ऐसे लोगों को महत्वपूर्ण पदों पर बिठाया जा रहा है, जिनकी योग्यता सामान्य से भी निचले स्तर की है। ऐसे अयोग्य लोग उन संस्थाओं का तो भट्टा बैठा ही रहे हैं, हिंदू हित का भी भारी अहित कर रहे हैं। इन विदुषी महिला का आरोप है कि कई मंत्रालयों ने उनसे ऐसे पदों पर चयन करने के पूर्व कुछ नाम सुझाने को कहा। इन्होंने अपनी ओर से देखे-परखे, ऐसे लोगों के नाम सुझाये, जिनकी योग्यता और हिंदू संस्कृति के प्रति आस्था उच्चकोटि की है। पर उन्हें हर बार निराशा हुई, क्योंकि जिन्हें चुना गया वे इनके सामने खड़े होने के भी लायक नहीं थे। उनका कहना था कि ऐसा नहीं है कि जो नाम उन्होंने सुझाये वे उनके परिचितों या मित्रों के थे। उनमें से कई लोगों को तो वे व्यक्तिगत रूप से कभी मिली भी नहीं थीं। केवल उनकी योग्यता ने उन्हें प्रभावित किया। कम्युनिस्टों की घोर विरोधी रही ये विदुषी महिला कहती हैं कि हमसे गलती हुई, जो

संस्थाओं को बिगाड़ रहे हैं और अपना मखौल उड़वा रहे हैं।

हिंदू संस्कृति के क्षेत्रों को विकास के मामले में मेरा भी अनुभव ऐसा ही रहा है। कई बार मैंने इस सवाल को इस कॉलम के माध्यम से उठाया है। मोदी जी ने अच्छी भावना से अनेक योजनाओं की घोषणा की, पर उनकी नीतियां बनाने और क्रियान्वयन करने का काम उसी नौकरशाही पर छोड़ दिया जो आज तक औपनिवेशिक मानसिकता के बाहर नहीं निकल पाई है। नतीजतन हिंदू संस्कृति से जुड़े मुद्दों पर जो भी योजनाएं बन रही हैं उनसे न तो व्यापक समाज का भला हो रहा है और न ही हिंदू संस्कृति का। पता नहीं

और पद के लिए हम न तो पहले झुके और न आगे झुकने की इच्छा है। झुके होते तो कब के सत्ता पर काबिज हो गये होते, क्योंकि सत्ता ने कई बार हमारा दरवाजा खटखटाया पर हमने उसे घर में घुसने नहीं दिया। हमारे जैसे लोग देश में लाखों की संख्या में हैं जो किसी की राजनीति का मोहरा बनने को तैयार नहीं हैं। पर देश व सनातन धर्म के लिए अपना जीवन खपाते आए हैं और अगर मोदी सरकार हमारे सुझावों को गंभीरता से ले तो हिंदू संस्कृति के हित में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि इन सब लोगों के पास अनुभव का लंबा खजाना है, विचारों की स्पष्टता है और लक्ष्य हासिल करने का जुनून भी।

रोहिंग्यां शरणार्थी भारत के लिए खतरा

हमारा भारत देश एक उदार देश है जिसका फायदा पहले बांग्लादेशी मुस्लिम शरणार्थी ने उठाया और अब रोहिंग्या मुस्लिम समाज के लोग उठाना चाह रहे हैं। पूर्व संस्कारों के लचीलेपन से बांग्लादेशी शरणार्थियों के आधारकार्ड तक बन गये उन्हें भारत की नागरिकता भी मिल गई। उन्हें पूर्ण वो सुविधा मिल गयी जो भारतीय नागरिकों को मिलती है। ये दर्शाता है पिछली सरकारों का लचीलापन जो अपने कुर्सी के लालच में पिछली सरकारों ने विशेष वर्ग के लोगों जो शरणार्थी थे उनके विरोध में ठोस कदम नहीं उठाया। जिन्हें आज भारत का नागरिक बना दिया गया। ये लोग किस पवर्ती के हैं सब जानते हैं। भारत की उदारता को देखते हुए अब रोहिंग्या मुस्लिम भारत की ओर शरण के लिए आ रहे हैं सरकार को चाहिए इन लोगों को यहां न घुसने दे पिछली सरकारों के द्वारा जो गलतियां हुईं उन्हें न दोराहें वैसे तो मेरी नजर यह गलती नहीं थी यह एक लचीलापन व तुष्टीकरण था। इसको दोहराना राष्ट्र व समाज के लिये घातक होगा। अपने ही देश में अपने ही समाज के लोग ठगा सा महसूस करेंगे पिछली सरकारों में तुष्टीकरण होता रहा है इस तुष्टीकरण को धर्म निरपेक्ष कहा गया जबकि धर्म निरपेक्ष का अर्थ होता है किसी विशेष धर्म को प्रोत्साहन न करना। कुछ सफेद पोश लोग तुष्टीकरण को बढ़ावा देते हैं। ताकि सत्ता हासिल की जा सके जो पिछली सरकारों में हुआ। वर्तमान में केन्द्र में एक राष्ट्रवादी सरकार है। इस राष्ट्रवादी सरकार से आशा की जा सकती है कि यह सरकार रोहिंग्यां शरणार्थियों को भारत में शरण नहीं देगी जैसे कि पिछली सरकारों ने बांग्लादेशी मुस्लिम लोगों को भारत में शरण दी थी ये लोग भारत विरोधी कार्यों में लिप्त पाये गये हैं। इन रोहिंग्यां शरणार्थियों बसाने से आतंकवाद व अलगाववाद को बढ़ावा मिलेगा।

पीयूष अरोड़ा

कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति द्वारा पत्र महोदय,

प्रणाम! १३ सितम्बर से १६ सितम्बर-२०१७ "हिन्दू सभा वार्ता समाचार" पत्रिका प्राप्त। धन्यवाद। राष्ट्रीय जीवन के प्रतीक स्वामी विवेकानन्द के बारे का लेख अच्छा है। पत्ता गोभी एवं पुदीना के औषधीय गुण की जानकारी सब लोगों के लिए आवश्यक है। अमृतरूपी गाय के दूध से एचआईवी एड्स से बचा सकता है। ऐसे उपयोगी विषय मिलते हैं।

'व्रतोत्सव प्रदर्शिका' में सभी उत्सवों के बारे में है। वर्ण व्यवस्था तथा जात-पात का प्रभाव हमारे देश को पंगु बना दिया है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के बारे में जानकारी प्रकाशित की है। पत्रिका महान विभूतियों को याद करती रहती है। मेरा साधुवाद।

भवदीय

वी एस. शांताबाई
बेंगलूर

(पिछले अंक का शेष)

मुसलमान तो कहते ही हैं कि उनका मजहब ही सच्चा मजहब है। अल्लाह और अल्लाह के रसूल के हुक्म कुरान और हदीस में दर्ज हैं। वे सत्य हैं, अपरिवर्तनीय हैं। उनका पालन करना हर मुसलमान का व्यक्तिगत और सामूहिक फर्ज है। वे उस फर्ज को सदियों से पूरा करते भी रहे हैं। भारत में निकट भविष्य में उस फर्ज को पूरा करने की जोरदार तैयारी चल रही है। परिणाम क्या होगा? लाखों-करोड़ों लोगों के खून से धरती लाल होगी। असंख्य महिलाओं का शील हरण और अपहरण होगा। अपनी सारी सम्पत्ति खोकर बचे आतंकित गैर मुसलमान लोग मुसलमान बनने को विवश होंगे। सभी वैचारिक स्वतंत्रता इस्लामी ईमान के घेरे में कैद हो जायेगी। मानव विकास की असीम संभावनाओं के पैरों में बेड़ियाँ पड़ जायेंगी। औरतों की आधी आबादी बुर्कों में और घरों में कैद हो जायेगी। मानवता घुट-घुट का दम तोड़ेगी, वैसी परिस्थिति में "ख" में वर्णित आदेशों का पालन करना जो बिल्कुल "क" के एक तरफा आक्रमता के विरोध में, मात्र आत्म सुरक्षा के लिए है, क्यों उचित नहीं है? अपनी इन प्रस्थापनाओं के साथ यदि इस्लाम धर्म हो सकता है तो फिर अधर्म क्या हो सकता है?

इस्लामी राज्य में गैर-मुसलमान अभिशापित लोगों के समान तिरस्कृत किए जाते हैं। इसलिए वे किसी भी प्रकार के अधिकार के योग्य नहीं समझे जाते हैं क्योंकि इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार-

"अल्लाह गैर-मुसलमानों (काफिरों) का शत्रु है।" (कुरान मजीद 2 : ६८ पृ. १४१)

"निश्चय ही अल्लाह ने 'काफिरों' पर लानत की है और उनके लिए (जहन्नम की) दहकती आग तैयार कर रखी है। जिसमें वे सदा रहेंगे।" (३३ : ६४-६५, पृ. ७५६)

कुरान आदेश देता है- 'ईमान' लाने वालों को चाहिए कि वे ईमान वालों के विरुद्ध 'काफिरों' को अपना संरक्षक-मित्र न बनाएँ और जो ऐसा करेगा तो उसका अल्लाह से कोई भी नाता नहीं।" (३ : २८ पृ. १८६)

कुरानी आदेशों (६ : २६, पृ. ३७२) के अनुसार-मुस्लिम

राज्यों में रहने वाले गैर-मुसलमानों को जजिया (पौल टैक्स) देने का विधान है, जो कि गैर-मुसलमान होने के कारण एक प्रकार का जुर्माना है।

...फिटकार हुए, जहाँ कहीं भी पाए जाएंगे, पकड़े जाएंगे और बुरी तरह कत्ल किए जाएंगे।" (३३ : ६०-६१ पृ. ७५६)

"हे 'ईमान' वालों! उन 'काफिरों' से लड़ो जो तुम्हारे आसपास हैं, और चाहिए कि वे

स्थापना हुई, वे सभी हिन्दू नरसंहार, मार-काट और विद्वेष के द्वारा निकाले या कत्ल कर दिए गए। इस्लामी देशों, में निश्चय ही अल्पसंख्यक गैर-मुसलमान या तो हैं नहीं, अथवा बहुत कम। इस प्रकार अधिकारों का गला घोटना इस्लामी नैतिकता का एक अंग बन चुका है।

क्योंकि अल्लाह की मर्जी के कारण इस्लाम, 'दीन-ए-गालिब' यानी 'प्रभुता का मजहब' है, मुस्लिम अल्पसंख्यक



हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

प्रो० ए०पी० सारस्वत

तुममें सख्ती पाएँ।" (२ : १२३, पृ. ३६१)

मुस्लिम हदीस (खंड १ : ७१ पृ. १०६) को देख सकते हैं जिसमें साफ कहा गया है- "क्योंकि इस्लाम समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण मजहब है, इसलिए यह अन्य सभी मजहबों को रद्द करता है।"

सरल शब्दों में कहा जाए तो इसका मतलब यही है कि मुसलमान गैर-मुसलमानों से श्रेष्ठतर हैं और उनका गैर-मुस्लिमों पर प्रभुता जमाना एक जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिए इस्लाम अपने को 'दीन-ए-गालिब' यानी 'प्रभुता का मजहब' कहता है।

एक उप-सद्भांत है- मुसलमानों द्वारा गैर-मुसलमानों को सताना, जोकि गैर-ईमानवालों यानी यहूदी, ईसाई, हिन्दू, बौद्ध आदि के मानव अधिकारों को नकारते हैं। इसके परिणाम स्वरूप गैर-मुसलमान मुस्लिम देशों में रहने को हतोत्साहित होते हैं, भले ही वे मूल रूप में मुसलमानों के पूर्वजों में से ही क्यों न हों। यह बात पहले ही इस घटना से न्यायोचित ठहरती है कि स्वयं पैगम्बर मुहम्मद ने सभी यहूदियों और अन्य गैर-मुसलमानों को अरेबिया से बाहर निकाल दिया।

आधुनिक उदाहरण पाकिस्तान का है। भारत के विभाजन से पहले इस क्षेत्र में लाखों गैर-मुसलमान रहते थे। मगर जैसे ही वहाँ पाकिस्तान की

अपने मजहब और सभ्यता के आदेशों का पालन करने के लिए गैर-इस्लामी मेजवान देशों को सताने व अपमानित करने के लिए हर सम्भव उपाय अपनाते हैं।

मुस्लिम राष्ट्रों के सभी राष्ट्रीय स्मारक 'काबा' की पवित्रता के सामने घटिया हैं। विश्वभर में किसी भी स्थान ने मानव जाति से इतनी प्रतिष्ठा नहीं पाई है जितनी कि मक्का के काबा ने। 'काबा' के प्रति सम्मान का अर्थ है, मक्का के लिए सम्मान, और अरेबिया में रहने वाले अरबों के प्रति सम्मान।

नीचे लिखी आयतों पर विचार कीजिए-

"हे ईमान लाने वालों! तुम मेरे दुश्मनों को और अपने दुश्मनों को अपना मित्र न बनाओ।" (६० : १, पृ. १०२६)

"हे नबी! 'काफिरों' और 'मुनाफिकों' के साथ जिहाद करो और उन पर सख्ती करो और उनका ठिकाना जहन्नम है और बुरी जगह है जहाँ वे पहुँचे" (६६ : ६, पृ. १०५२)

"उन्हें (काफिरों को) जहाँ कहीं पाओ, पकड़ो और उनका वध करो और उनमें से किसी को अपना साथी और सहायक न बनाओ।" (४ : ६०, पृ. २३७)

"निश्चय ही अल्लाह ने 'काफिरों' पर लानत की है और उनके लिए (जहन्नम की) दहकती आग तैयार कर रखी है जिसमें वे सदा रहेंगे और कोई

मित्र और सहायक न पावेंगे।" (३३ : ६४-६५ पृ. ७५६)

(नोट: कुरान की सभी आयतों के हिन्दी अर्थ मुहम्मद फारुखी द्वारा अनुवादित 'कुरान मजीद', १६८० के संस्करण से लिए गए हैं)

गैर-मुसलमानों के प्रति नफरत करने से इस्लाम मानव-अधिकार विरोधी हो जाता है। यही कारण है कि मुस्लिम देशों में गैर-मुस्लिम अधिक नहीं पाए जाते हैं। पैगम्बर मुहम्मद ने अपने अनुयायियों (मुसलमानों) को आदेश दिया कि सभी पैगनों (यहूदी, ईसाई, हिन्दू, नास्तिक आदि) को अरेबिया से बाहर निकाला जाए। (बुखारी खंड ४ : ३६२ पृ. २५६-२६०) और उसने स्वयं यहूदियों को निकाल दिया।

इस्लामी शासन के आक्रामक स्वरूप की इस बात से परीक्षा की जा सकती है कि मुसलमान भारत के हिन्दुओं के आध्यात्मिक केन्द्र बनारस में अपनी मस्जिदें बना सकते हैं परन्तु कोई हिन्दू, ईसाई और यहूदी अपना मन्दिर, चर्च या सिनेगोग यहूदी मंदिर) मक्का में नहीं बना सकता है।

पाकिस्तान में हिन्दुओं की आपबीतियाँ:

१. "मेरे घर का सारा सामान चोरी हो चुका है, बच्चों को पीटा गया है। मैंने अपनी पत्नी को वहाँ नहीं पाया। मुझे रातभर के लिए जेल में डाल दिया गया। मैंने अपनी पत्नी को दोबारा नहीं देखा कि

उसका क्या हुआ। मेरी बेटी २०११ में हाईस्कूल में थी, वह ट्यूशन के बाद घर नहीं लौटी। मैं सड़क किनारे बेटे के साथ बैठा हुआ रोने लगा, एक असहाय पिता की तरह। मैंने अपनी बेटी को आते देखा, उसके कपड़े फट चुके थे, ५ दिन उसके साथ रेप किया गया। उससे इतनी गंदी चीजें कराई गई कि मैं बता भी नहीं सकता। मेरी बेटी कभी सामान्य हालते में नहीं लौट पाई, आखिर उसने खुदकुशी कर ली।" (प्रथम प्रवक्ता, १६ जून २०१५)

२. "हम अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते, क्योंकि उन्हें जबरदस्ती इस्लाम के बारे में पढ़ाया जाता है, ऐसा नहीं करने पर पिटाई की जाती है। हम अपनी औरतों को बाहर नहीं भेज सकते, क्योंकि वो उनके साथ छेड़खानी करते हैं, फर्शियाँ कसते हैं। हम उनका विरोध नहीं कर सकते, क्योंकि हमने अगर ऐसा किया तो वो अगले कदम के तौर पर बलात्कार करेंगे। महिलाओं को लगातार अपहरण होता है और बाद में पता चलता है कि उन्हें इस्लाम धर्म के कन्वर्ट कर दिया गया। अगर हम पुलिस-स्टेशन जाते हैं तो वो कहते हैं- "तुम काफिर हिन्दू हो" और हमें दूर कर देते हैं। हमारे घर सुरक्षित नहीं हैं, यहाँ तक कि छोटे से झगड़े के बाद भी स्थानीय मुस्लिम हमारे घरों पर अवैध रूप से कब्जा कर लेते हैं। हमारे पास अच्छी नौकरियाँ नहीं हैं और हम केवल छोटे-मोटे काम ही कर पाते हैं। हमारे मंदिर जला दिए जाते हैं, तोड़ दिए जाते हैं, मूर्तियाँ खंडित कर दी जाती हैं।" (प्रथम प्रवक्ता, १६ जून २०१५)

३. "मेरे पास पाकिस्तान में बड़ा घर था लेकिन मैंने उसे महज २ लाख रुपए में बेच दिया जबकि उसकी वास्तविक कीमत एक करोड़ रुपए थी। मुस्लिमों ने हमारी जमीन छीन

बिट कार्डिन आतंकवाद की आभासी मुद्रा

प्रेम राव

बिट कार्डिन एक ऐसा नाम है जो कि सामान्यजन के लिये अनजान एवं समझ से परे है। किसी भी देश की मुद्रा उस देश के लिये विनिमय का एक सशक्त माध्यम होती है लेकिन किसी भी दूसरे देश में उसका विनिमय विदेशी मुद्रा के तहत होता है। उसकी अन्य देश में दरे अन्तराष्ट्रीय मानको के जरिये तय की जाती हैं। लेकिन बिट कार्डिन किसी भी देश द्वारा जारी मुद्रा नहीं है बल्की यह केवल नेट पर दिखने वाली आभासी मुद्रा है। जो कि किसी भी नेट प्रयुक्तकर्ता को उसके द्वारा नेट के ही माध्यम से उसके मानक पूर्ण कर लेने पर उसके नेट खाते में ही एक अंक का आभास कराती है कि आप द्वारा कितने बिट कार्डिन कमा लिये गये हैं। जब प्रयुक्तकर्ता अथवा आभासी खाता धारक इनको अपनी मुद्रा में बदलना चाहता है तो उसको उसके देश की मुद्रानुसार उसका भुगतान कर हो जाता है।

अभी वर्तमान में ही १४ जुलाई को भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फसले में बिट कार्डिन से सम्बन्धित फैसला देते हुये भारतीय रिजर्व बैंक को बिट कार्डिन पर लगाम लगाने के निर्देश जारी किये हैं। जब अखबारों में इस के समाचार प्रकाशित हुये तो यह मुद्रा वैचारिक मंच पर बहस का एक कारण बन कर उभरी है। समालोचक एवं विचारक अपने अपने मत विभिन्न पहलुओं पर व्यक्त करते नजर आये लेकिन किसी ने भी बिट कार्डिन पर रोक लगाने के लिये ठोस उपाय तलासने पर अपनी रूपरेखा प्रस्तुत नहीं की। केवल भारतीय रिजर्व बैंक को सुप्रीम कोर्ट के दिये गये निर्देशों के पहलुओं पर ही चर्चा सीमित हो गयी।

सुप्रीम कोर्ट ने रिजर्व बैंक को इस आभासी मुद्रा के खरीद फरोस्त पर तुरन्त रोक लगाने के लिये कहा और निर्देश दिये कि इस आभासी मुद्रा का अवैध व्यापार धड़ल्ले से रिजर्व बैंक की नाक के नीचे ही हो रहा है। सी जे आई खेहर और जस्टिज चन्द्रचूड की पीठ ने इन्टरनेट प्रणाली एक्सपर्ट विजय पाल एवं सिद्धार्थ डालमिया की याचिका पर सुनवायी करते हुये इस पर फैसला सुनाया तथा बिट कार्डिन को राष्ट्र विरोधी बताते हुये गैरकानूनी घोषित किया।

क्या है बिट कार्डिन

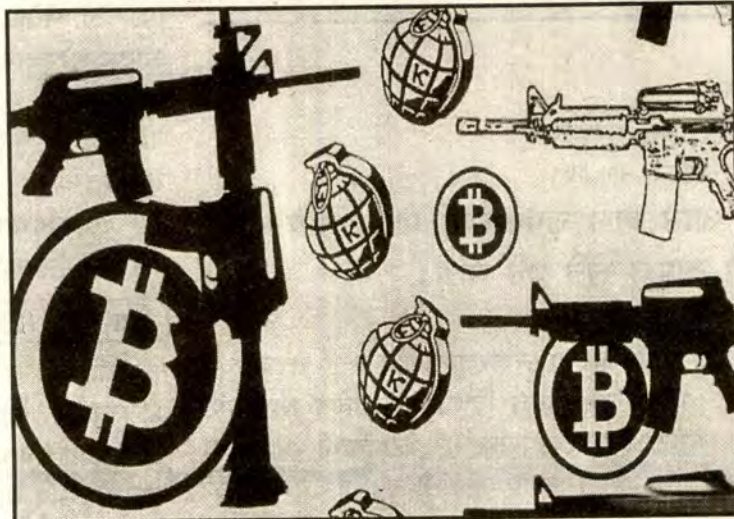
नेट पर सर्च करने पर बिट कार्डिन की एक डिजाइन का आभास जरूर होता है लेकिन केवल ये नेट दर्शनार्थ ही है। वॉलेट या पर्स में रखने के लिये नहीं। यह स्वर्णिम आभासी मुद्रा युवाओं को तेजी से गैरकानूनी कार्य के जरिये अपने कमायी में इजाफा करने अपनी अनावश्यक जरूरतों को पूरा करने तथा राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर गैर वाजिब कार्यों को अन्जाम देने के लिये एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है।

बिट कार्डिन क्या है यह किसी भी आम जन को नहीं मालूम। वास्तव में बिट कार्डिन एक नेट की मुद्रा है जिसकी ना कोई सीमाएँ है ना कोई देश ना कोई आकार है ना कोई हार्ड कापी ना कोई इसका बाजार मूल्य है ना कोई विनिमय मूल्य। लेकिन बिट कार्डिन विनिमय के लिये नेट के जरिये एक बड़ा आधार बनता जा रहा है। यह मुद्रा हवाला के लिये एक माध्यम है। यह मुद्रा आतंकवाद के लिये एक वरदान है। यह मुद्रा दो देश की सीमाओं के मध्य गैर कानूनी माल की आवाजाही के लिये एक रास्ता है। यह मुद्रा टैक्स चोरी के लिये एक साधन है। काले धन को रखने के लिये अब विदेशी बैंकों में खाते की आवश्यकता नहीं बल्की बिट कार्डिन एक माध्यम है। मानव तस्करी के लिये बिट कार्डिन एक कारगर उपाय है। योन शोषण के लिये बिट कार्डिन एक विनिमय है। गैर कानूनी निवेश के लिये यह एक बहुत ही सुरक्षित माध्यम है।

बिट कार्डिन का प्रयोग मुख्यतः अब आतंकवाद में होने लगा है। अब कश्मीर में पत्थरबाजों को नकली भारतीय या पाकिस्तानी मुद्रा देने का प्रचलन धीरे धीरे कम होने लगा है तथा उनके नेट खाते में बिट कार्डिन जमा किये जाने लगे हैं। आतंक वादी संगठन भी अपने दहशतगदों को मुद्रा के बदले बिट कार्डिन के जरिये क्रेडिट देने लगे हैं। इसका फायदा यह होता है कि किसी भी दहसदगद को पकड़े जाने पर उसके पास से किसी भी प्रकार की मुद्रा तलाशी के दौरान नहीं मिलती अतः उससे उसके देश से सम्बन्ध नहीं जोड़े जा सकते उसके मारे जाने अथवा

पकड़े जाने पर उसके घर वाले उसके खाते में पड़े बिट कार्डिन आसानी से अपने देश की मुद्रा में हवाला के जरिये भुना लेते हैं।

सुप्रीम कोर्ट में अपीलकर्ता ने यह भी बताया कि किस प्रकार १३ मई को भारत ब्रिटेन सहित दुनिया के अन्य देशों में कम्प्यूटर को हैक करने के लिये इस आभासी मुद्रा का प्रयोग किया गया। कम्प्यूटर हैकर ने बड़े पैमाने पर पूरी दुनिया में कारपोरेट जगत के नेटवर्किंग साईड पर जा कर उनको हैक कर दिया और उसके



बदले में उन्हें फिर से हैकिंग मुक्त करने के लिये १८००० से ४०००० तक प्रति कम्प्यूटर की मांग की गयी और इसका लेनदेन बिट कार्डिन के रूप में ही हुआ। इससे यह हुआ कि हेकर्स का कोई भी सुराग नहीं लगा और उनके खाते में अरबों बिट कार्डिन जमा हो गये जिन्हे बाद में उनके द्वारा हवाला के माध्यम से अपने देश की मुद्रा में बदल लिया।

सुप्रीम कोर्ट में दायर की गयी याचिका में इस बात को विस्तार पूर्वक ३५२ पेजों में बताया गया कि इस मुद्रा का उपयोग किस प्रकार आतंकवाद में होता है। नशीली दवाओं का कारोबार

किस प्रकार बिट कार्डिन के माध्यम से फलफूल रहा है। नक्सलवाद के लिये और आतंकवाद के लिये हथियारों की खरीद फरोत में इस मुद्रा ने सभी हदें पार कर ली है और सारे रास्ते भी खोल दिये हैं। आतंकवादी गतिविधियों के लिये बन्दों की भर्ती, धूसखोरी के लिये मुद्रा रहित घूस, भ्रष्टाचार के लिये आभासी मुद्रा का लेनदेन, मनी लान्ड्रिंग में इस का प्रयोग बेहिचक किया जा रहा है। इस मुद्रा का पकड़े जाने पर भी किसी भी प्रकार का जब्त किये जाने का भी खतरा नहीं है, क्यों कि यह मुद्रा केवल आभासी है पेपर मनी, धातू मनी या किसी भी देश के बैंक द्वारा जारी की गयी मुद्रा नहीं है तथा फिजिकल भी नहीं है।

इसे इस प्रकार समझे कि आपने अपने बैंक खाते में कोई राशी जमा करायी अब आपके पास कोई मुद्रा नहीं है केवल आपके बैंक खाते में मुद्रा का आभास होता है। आप बिना मुद्रा निकाले ही

अपने मोबाईल से अपने कार्ड से अपने नेट अकाउन्ट के माध्यम से किसी के भी खाते में मुद्रा हस्तान्तरित कर सकते हैं। अब चूकी यहां पर आपका बैंक खाता है इसलिये आप गिरफ्त में हैं। लेकिन जब आपका खाता किसी भी बैंक में नहीं हो तथा आप केवल नेट पर अपने एक खाते के माध्यम से मुद्रा का लेनदेन कर रहे हैं तो आपके गिरफ्त में आने का भी कोई प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि इसकी जानकारी किसी को भी नहीं है।

नेट पर सर्च करने पर बिट कार्डिन की एक डिजाइन का आभास जरूर होता है लेकिन

केवल ये नेट दर्शनार्थ ही है। वॉलेट या पर्स में रखने के लिये नहीं। यह स्वर्णिम आभासी मुद्रा युवाओं को तेजी से गैरकानूनी कार्य के जरिये अपने कमायी में इजाफा करने, अपनी अनावश्यक जरूरतों को पूरा करने तथा राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर गैर वाजिब कार्यों को अन्जाम देने के लिये एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है। इसलिये हमें और हमारे आस पास इस प्रकार की किसी भी आभासी मुद्रा के कारोबार की अगर भनक भी लगती है तो हमें सावधान रहने के साथ साथ इस पर कार्यवाही करने के लिये भी आगे आना होगा।

सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका में सी.जे.आई खेहर और जस्टिज चन्द्रचूड की पीठ ने इन्टरनेट प्रणाली एक्सपर्ट विजय पाल एवं सिद्धार्थ डालमिया की याचिका में स्पष्ट तौर पर बताया गया कि रिजर्व बैंक की जानकारी में यह सब कुछ है और उसके द्वारा इस पर रोक के उपाय भी किये गये हैं लेकिन बिट कार्डिन धारक तथा नेट काउन्सलर इन से ज्यादा एक्सपर्ट हैं और रिजर्व बैंक के द्वार की गयी कार्यवाही पर उनकी कार्यवाही भारी पडी है। यह हमारे देश की मुद्रा तथा राष्ट्र के लिये एक बहुत बड़ा नासूर बनने जा रही है और समय रहते अगर इस पर रोक नहीं लगायी गयी तो भारतीय मुद्रा पर बहुत ही बुरा असर पड़ने वाला है। इस मुद्रा को भारत में चलन से बाहर करने के लिये हमें एक सशक्त साईबर कानून की आवश्यकता है तथा अब पुराने ठर्रे पर कार्य कर रही पुलिस को भी अपने आप को बदलने की जरूरत है। राज्य सभा में दी गयी एक जानकारी के अनुसार आज देश में अगर १२००० करोड़ का लेनदेन डिजिटल माध्यम से होने लगा है तो प्रीपेड पेमेंट जिसमें ई वॉलेट भी शामिल है का प्रचलन बड़ा है। वही रिजर्व बैंक को इन माध्यमों से होने वाले फ्राड के लिये एक सेल स्थापित करना पडा है जिसमें फ्राड के डाटा रखने का प्रावधान है। वर्ष २०१५-२०१६ में इस प्रकार के फ्राड की संख्या १६४६८ थी वही पर वर्ष

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

डॉ० महेश शर्मा जी,
माननीय संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार।

विषय : दिल्ली सहित पूरे देश में रामलीलाओं को सभी सुविधायें निःशुल्क उपलब्ध कराने के संबंध में।

महोदय,

हिन्दुस्तान के 900 करोड़ हिन्दू भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम मानते हैं। भगवान राम धर्म एवं मर्यादा के प्रतीक हैं। हमें उनके जीवन से प्रेरणा मिलती है। भावी पीढ़ी, युवा वर्ग एवं बच्चों को भगवान राम के मर्यादा एवं धर्म की जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से देश में रामलीलाओं का आयोजन किया जाता है। परन्तु आयोजन समितियों को रामलीला के आयोजन में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कृपया रामलीलाओं के आयोजन को सुगम एवं सफल बनाने के लिये निम्नलिखित कार्यवाही करने की कृपा करें:-

1. दिल्ली में डीडीए द्वारा जमीन उपलब्ध कराने के बदले मोटी रकम वसूल की जा रही है। यह रामलीला आयोजन के लिये कष्टकारी है। कृपया रामलीलाओं के आयोजन के लिये भूमि निःशुल्क आबंटित कराने हेतु डीडीए को निर्देशित किया जाये।
2. रामलीला आयोजन के लिये कई विभागों से अनापत्ति प्रमाण पत्र लेना पड़ता है। यह एक लम्बी प्रक्रिया है। कृपया आयोजन की अनुमति की प्रक्रिया को सरल बनाया जाये।
3. रामलीला के आयोजन में बड़ी राशि खर्च होती है। इसमें सरकार का कोई सहयोग नहीं होता है। कृपया रामलीला के आयोजन में भारत सरकार तथा राज्य सरकार की ओर से आर्थिक सहायता प्रदान की जाये।

सादर

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,

श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार।
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : दिव्यांगों के काम आने वाले उपकरणों पर लगाये गये जीएसटी को वापस लेने की मांग।

महोदय,

आपको ज्ञात है कि देश के दिव्यांग कमजोर व जरूरतमंद हैं। उन्हें सरकार के सहयोग व संरक्षण की आवश्यकता है। परन्तु दुर्भाग्यवश दिव्यांगों के काम आने वाले सामानों, दिव्यांगों के वाहनों, व्हील-चेयर, ब्रेल टाइपराइटर, बैसाखियों आदि पर जीएसटी लगा दिया गया है। इससे दिव्यांगों की समस्याएं और भी बढ़ जायेगी। इनकी सहायता के लिये इनके लिये उपयोगी सामानों पर कोई-टैक्स नहीं लगना चाहिए।

अतः आपसे हमारी मांग है कि दिव्यांगों के काम आने वाले सभी तरह के उपकरणों पर लगाये गये जीएसटी को तुरन्त वापस लिया जाये। इसके लिये यदि आवश्यकता हो तो जीएसटी काउंसिल की तत्काल बैठक बुलाकर प्रस्ताव पास करा लिया जाये।

सादर

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 4 का

गोपाष्टमी के दिन गोपूजन कार्यक्रम....

वृद्धि हो।। २।।

गोसेवा में लगनेवाला मेरा धन धन्य है, गोवंश बो लिये जीना महत्वपूर्ण है और गोरक्षा के लिये अपने-आप को समर्पित कर देना मैं सबसे बड़ा पुण्य मानता हूँ। इन संकल्पों की सिद्धि के लिये मैं पुनः अपनी माता गौ को प्रणाम करता हूँ।। 3।।

इसके बाद गोचाराग हेत प्रस्थान करवायें तथा समारोह का विसर्जन करवाये।

सभी कार्यों की सिद्धि के लिये गोमाता की वन्दना

नयो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयोभ्य एव च।

नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।। 9।।

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।

त्वं तीर्थ सर्वतीर्थानां नमस्ते-स्तु सदा-नघे।। 12।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत्स्थावरजंगमम्।

तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।। 13।।

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः।

गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्।। 14।।

इत्याचम्य जपेत् सांय प्रातश्च पुरुषः सदा।

यदा कुरुते पापं तस्मात् स परिमुच्यते।। 15।।

श्रीमती, सौरभेयी, ब्रह्मसूत्र और सबको सावन करनेवाली गौओं को मेरा प्रणाम है। हे निष्पापे ! तुम सब देवताओं की माता, यज्ञ को कारणरूपा और सम्पूर्ण तीर्थों की तीर्थरूपा हो; हम तुम्हें सदा प्रणाम करते हैं। जिस गौ से यह चराचर अखिल जगत् व्याप्त है उस भूत और भविष्य की जननी गौ को मैं सिर के नवाकर बारम्बार प्रणाम करता हूँ। गौएँ मेरे आगे हो, पीछे हों और मेरे हृदय में विराजमान हों। मैं सदा गौओं के मध्य में ही निवास करूँ। जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातः काल और सांयकाल आचमन करके उपर्युक्त मन्त्र का जप करता है, उसके दिनभर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

पूजोपचारकथनम्

गोमाता की पूजा सबको करनी चाहिये। इससे सभी देवता और पितर तृप्त होते हैं। अपनी व्यवस्था के अनुसार पञ्चोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार, अष्टादशोपचार, राजोपचार, यथोपचार या गोप्रास मात्र से भी गोपूजन अवश्य करे। पूजन में सर्वथा शुद्ध वस्तु का प्रयोग करे। दुकान की सामग्री का पूर्ण परीक्षण कर उसका उपयोग करे। नैवेद्य के रूप में अच्छा गुड़, फल, हरि कोमल घास अथवा दलिया-कन्न ही उपयोग करें।

पूजन सम्बन्धी विविध उपचारों का दिशानिर्देश

पञ्चोपचार - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

दशोपचार - पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

षोडशोपचार - आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा और पुष्पाञ्जलि।

अष्टादशोपचार - १६ उपचारों में फल और दक्षिणा मिलाये।

राजोपचारः - अष्टादश उपचारों से अतिरिक्त पञ्चामृतस्नान, उद्वर्तनस्नान, मधुपर्क, परिमलद्रव्य पादुका, पालना, पंखा, छत्र, चामर, वाद्य, आरती, नृत्य, गीत और शय्या समर्पित करे।

उपचारों के अभाव में यथासाध्य गोप्रास एवं प्रणाम आदि से भी गोमाता की आराधना सबको करनी चाहिये।

शेष पृष्ठ 12 का

यह कैसा कट्टरवाद....

कट्टरता के साथ साथ शांति प्रिय जिहाद के लिये भागीदारी भी बनी रहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। आपको स्मरण होगा कि २०१२ में जब हामिद अंसारी को पुनः उपराष्ट्रपति बनाने की तत्कालीन संप्रग सरकार में चर्चा हुई तो श्रीमान हामिद अंसारी ने राष्ट्रपति पद पाने के लिये उत्सुकता दिखाई थी और पुनः उपराष्ट्रपति बनने के लिये तैयार नहीं थे। परन्तु जब श्री प्रणव मुखर्जी का राष्ट्रपति बनना सुनिश्चित हो गया तो फिर इन्होंने पुनः उपराष्ट्रपति बनने में ही अपनी भलाई समझी। लेकिन भविष्य में उनकी भारत का राष्ट्रपति बनने की महत्वाकांक्षा अभी शेष है इसीलिए वे चाहते होंगे कि ऐसे विवादित कथन से छद्म धर्मनिरपेक्ष दलों की चर्चा में बनें रहेंगे और संभवतः भविष्य में भारत का राष्ट्रपति बनने की अभिलाषा भी पूरी हो सकेंगी, तो इससे अधिक सुरक्षित और शोभायमान पद उनके लिये और क्या हो सकता है? यहां यह भी उल्लेख करना अवश्यक है कि हमारे प्रधानमंत्री जी की यह कूटनीति समझो या सरकारी औपचारिकता जो उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के कारण ही उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के अवकाश की अंतिम बेला पर कुछ ऐतिहासिक विवादित बिंदुओं का उल्लेख करते हुए भी उनका सम्मान रखते हुए उनकी सराहना करके निभाई है। लेकिन राष्ट्र को यह विचार अवश्य करना होगा कि साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वाली मुस्लिम कट्टरता के विरोध की आवश्यकता क्यों है? अन्यथा इतिहास साक्षी है कि कट्टरवाद के कारण ही मुस्लिम उन्मुखी राजनीति आरम्भ हुई थी जिससे देश का विभाजन हुआ और स्वतंत्रता के बाद भी कट्टर मुसलमानों में भारतीयता और उसके प्रतीकों के प्रति आज तक कोई सम्मान नहीं जागा। ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्य धारा में लाने के नाम पर मुस्लिम समाज के चरणों में कितनी ही सुख-सुविधाओं की धाराएँ बहा दी जाय तब भी इनकी अनन्त इच्छायें कभी पूरी नहीं हो सकती और इनकी कट्टरवादिता इनको भारतीय संस्कृति अपनाने में बाधक ही बनी रहेगी।

शेष पृष्ठ 1 का शहीद की बेटी ने कहा हमें पिता.....

के बलिदान का बदला नहीं लेती, तब तक उनके लिए कोई भी बात बेकार है। उनके पिता की मौत जम्मू एवं कश्मीर में श्रीनगर हवाईअड्डे के पास सीमा सुरक्षा बल के 9-2 बटालियन शिविर पर हुए आतंकी हमले की जवाबी कार्रवाई के दौरान हुई थी। उन्होंने कहा हम उन पाकिस्तानी आतंकवादियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई चाहते हैं। उन्होंने कहा कि उनके परिवार और बिहार के भागलपुर जिले में स्थित उनके मूल गांव कमलचक के निवासियों को उनके पिता के बलिदान पर गर्व है। गौरतलब है कि पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद आतंकवादी समूह के आत्मघाती हमलावरों ने मंगलवार को बीएसएफ शिविर पर हमला किया, जिसके बाद हुई मुठभेड़ में तीन हमलावर मारे गए और एक जवान शहीद हो गया। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने यादव के परिवार को 99 लाख रुपये की राशि देने का ऐलान किया है। वहीं राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद ने शोकसंतप्त परिवार के लिए संवेदना व्यक्त की है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारत सरकार से मांग की है कि हिन्दुस्तान में आतंकवाद की घटनाओं पर तुरन्त विराम लगे।

शेष पृष्ठ 1 का पाकिस्तान ने भारतीय.....

को यूएनएमओजीआईपी को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों के अनुसार उसकी भूमिका निभाने की अनुमति देनी चाहिए। भारत का मानना है कि भारत और पाकिस्तान में संयुक्त राष्ट्र के सैन्य पर्यवेक्षक समूह यूएनएमओजीआईपी की उपयोगिता समाप्त हो चुकी है और शिमला समझौते तथा नियंत्रण रेखा के निर्धारण के बाद यह अप्रासंगिक हो गया है। इस बीच भारत सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले में एलओसी पर पाकिस्तान द्वारा सीमापार से गोलाबारी में सोमवार 2 अक्टूबर को दो नाबालिग मारे गये और 92 नागरिक घायल हो गये। घायलों में पांच बच्चे भी हैं जिनमें सबसे छोटी पांच साल की जोबिया कौसर है जिसे हेलीकॉप्टर से जम्मू के एक अस्पताल ले जाया गया। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि पाकिस्तान सीमा पार आतंकियों के घुसपैठ को तुरन्त बन्द करे अन्यथा भारत सरकार पुनः सर्जिकल स्ट्राइक के द्वारा आतंकी अड्डों को नेस्तनाबूद करें।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

:- तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये
द्विवार्षिक.....300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीऑर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 8 का हिन्दू अस्तित्व, संकट.....

लीं। हमें मजदूरों की तरह अपनी ही जमीनों पर काम करना पड़ा। हम अपने मृत परिजनों का दाह-संस्कार नहीं कर सकते, हमें उन्हें दफनाना पड़ता है। मेरी बेटी का दिनहाड़े अपहरण कर लिया गया। मैं पुलिस से भी मदद की गुहार नहीं कर सका। सोचिए भला उस बाप या भाई पर क्या बीतती होगी, जिसे मालूम है कि इस समय उसकी बेटी के साथ बलात्कार किया जा रहा होगा या फिर उसका धर्म बदला जा रहा होगा। आपकी हालत जानवरों से भी गईबीती है, अगर आप पाकिस्तान में हिन्दू हैं। बकरियाँ भी शायद पाकिस्तान में हिन्दुओं से ज्यादा अच्छा व्यवहार पाती हैं। हमारी सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि पाकिस्तान में हम हिन्दू हैं और भारत में पाकिस्तानी!” (प्रथम प्रवक्ता, 96 जून 2014)

पाकिस्तान में हिन्दू-सिख अपने सम्बंधी की मौत पर दाह-संस्कार की रस्म-अदायगी करने को मजबूर हैं। मृतक की दायीं हथेली पर गर्म सिक्का राख कर दाह-संस्कार की रस्म पूरी करने के बाद शव को दफना दिया जाता है। 35000 की हिन्दू-सिख आबादी वाले खैबर पख्तूनवा प्रांत में कोई शमशान घाट नहीं है। पेशावर में बसे अल्पसंख्यक सैकड़ों मील दूर पंजा साहिब में करते हैं अंतिम संस्कार, शव ले जाने पर 80 से 90 हजार का खर्च सबके बस की बात नहीं। सिंध की तहसील बदीन के गांव कुमदर कारोमल में सड़क हादसे में मारे गए 30 वर्षीय दलित हिन्दू भूख भील का जब उनके परिजन दाह-संस्कार करने लगे तो स्थानीय मुसलमानों ने उन्हें यह कह कर रोक दिया कि इस्लामिक देश में वे किसी मृतक को जलाने की अनुमति नहीं देंगे। इस पर हिन्दुओं ने शव को कब्रिस्तान में दफना दिया। मुस्लिम समुदाय को जब यह पता चला तो उन्होंने कब्र खोद डाली और भील का शव निकाल कर मुख्य सड़क पर फेंक दिया। (अमर उजाला 6.9.18) (शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 6 का बिट कार्डिन आतंकवाद की.....

2016-2017 में फ्राड की संख्या 93653 रही। भारतीय जांच एजेंसीयों की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2014-2016 में आतंकी गतिविधियों के लिये भारतीय मुद्रा मूल्य के लिये जहां 253 करोड़ के बराबर बिट कार्डिन का लेनदेन हुआ वहीं वर्ष 2016-2017 में यह आंकड़ा 300 करोड़ के पार पहुंच गया। नोट बन्दी के कारण बिट कार्डिन का कारोबार ज्यादा तेजी से प्रचलन में आया क्योंकि इस मुद्रा में किसी भी प्रकार की नोट बन्दी जैसी स्थिति नहीं है। इसी पर सी.जे.आई खेहर और जस्टिस चन्द्रचूड की पीठ ने सुनवायी करते हुये इस पर फैसला सुनाया तथा बिट कार्डिन को राष्ट्र विरोधी बताते हुये गैरकानूनी घोषित किया। अब देखना यह है कि क्या बिट कार्डिन के प्रति रिजर्व बैंक के साथ साथ सरकार भी जागरूक होगी क्योंकि बिट कार्डिन के उपयोग और उपभोग के तथ्य सभी के सामने हैं। सदन के पटल पर भी इसका उल्लेख किया जा रहा है। बिट कार्डिन के कारण हमारे दुश्मन देश को भी काफी राहत मिली है क्योंकि अब उसे भारतीय नकली मुद्रा छाप कर नेपाल के रास्ते अथवा भूटान के रास्ते चोरी छिपे भेजने की भी आजादी मिली है। ये देश अब आभासी मुद्रा के माध्यम से अब अपनी गतिविधियां संचालित करने लगे हैं। इसके प्रति अन्तराष्ट्रीय कोर्ट में भी आवाज उठायी जा चुकी है लेकिन किसी संस्थागत नियन्त्रण नहीं होने के कारण इस पर कार्यवाही किया जाना सम्भव नहीं हो पाया है।

शेष पृष्ठ 9 का अनुच्छेद 370 के मृतक अंगों.....

अनुच्छेद में परिवर्तन करने या उसे हटाने की बात तो दूर, इस अनुच्छेद के खोल के भीतर के नकारा हो चुके अंगों को बाहर निकाल कर सफाई करने की अनुमति भी नहीं दी जा रही। ऐसा कहा जा रहा है कि अनुच्छेद 370 का दरवाजा तभी खुल सकता है जब उस पर लगे ताले की कुंजी जम्मू कश्मीर सरकार राष्ट्रपति को सौंप दें या फिर राष्ट्रपति स्वयं जम्मू कश्मीर सरकार से उस कुंजी की मांग कर लें। राष्ट्रपति तो इस मामले में पहल नहीं कर सकते क्योंकि खतरा है कि राज्य सरकार कुंजी देने से इन्कार कर सकती है। जम्मू कश्मीर सरकार खुद कुंजी केन्द्र के हवाले कर देगी-ऐसी संभावना नहीं के बराबर है। इसलिए विधायिका को स्वयं इस बात पर विचार करना चाहिए कि अनुच्छेद 370 के भावार्थ को बदले बिना उसकी भाषाई साफ सफाई की व्यवस्था की जाए। वैसे भी भारत सरकार ने स्वच्छता अभियान चला रखा है। लगे हाथ अनुच्छेद 370 में भी साफ सफाई कर ली जाए तो भाव और अर्थ दोनों की रक्षा हो जाएगी। यह अलग बात है कि जम्मू कश्मीर में जिनका आर्थिक और राजनैतिक स्वार्थ अनुच्छेद 370 से ही चलता है, वे जरूर रुदाली रुदन करेंगे और उनके साथ बकरे भी मींगन करेंगे कि बिना भाव को छोड़े, केवल सफाई से भी रियासत का दर्जा-ए-खास नष्ट हो जाता है। ऐसे लोगों के लिए इतना ही कि अल्लाह इन्हें स्वच्छता में रहने की तौफिक दे।

शेष पृष्ठ 4 का मानसिक तनाव दूर करें.....

हैं उन सबका संबंध मन से होता है। चूँकि ज्ञानमुद्रा का सम्बन्ध मन से है इसलिए योग करने से दूर हो जाते हैं। अनिद्रा, मानसिक अवसाद, स्मृतिभंग, तनाव, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, सिरदर्द, बेचैनी, क्रोध, चिन्ता भय इत्यादि सब रोग इस मुद्रा के अभ्यास से दूर हो जाते हैं। मन की एकाग्रता, स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए ध्यान, धारणा, समाधि अर्थात् संयम के लिए इस मुद्रा का विशेष अभ्यास करें।

यह भी सच है

यह कैसा कट्टरवाद

विनोद कुमार सर्वोदय

जब प्रधानमंत्री जी का स्पष्ट संदेश है कि सबका साथ एवं सबका विकास ही सशक्त राष्ट्र निर्माण का मार्ग है तो ऐसे वातावरण में यह अत्यंत विचारणीय तथ्य है कि उपराष्ट्रपति जैसा उच्चपद भी कट्टरवाद के कारण उच्च शिक्षित मुसलमान को भी राष्ट्र की मुख्यधारा में समाहित करने में असफल रहा। लेकिन यह तो सोचना ही होगा कि अनेक वर्षों तक विभिन्न मुस्लिम देशों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले डॉ० हामिद अंसारी क्या मुस्लिम मानसिकता से प्रभावित नहीं हुए होंगे? इसके अतिरिक्त उन्हें अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का भी तो सानिध्य प्राप्त हुआ था। अतः यह कहना उचित ही होगा कि अन्तः स्थल तक वे मुस्लिम कट्टरवाद से ग्रस्त अवश्य होंगे? फिर भी उन्हें अपने उपराष्ट्रपति पद के कार्यकाल की अंतिम बेला पर 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' को नकारना नहीं चाहिए था। उन्होंने नेशनल लॉ स्कूल आफ इंडिया यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु में 19 अगस्त को जो विचार व्यक्त किये तथा राज्य सभा दूरदर्शन पर करण थापर को 10 अगस्त को जो साक्षात्कार दिया उससे हमारी तथाकथित धर्मनिरपेक्षता पर चोट अवश्य हुई है। क्या उनको अपने इस उच्च पद की गरिमा का भी ध्यान नहीं रहा? वे केवल दिखावे को मुस्लिम समाज की चिंता करते हुए यह मानते हैं कि भारत में मुसलमान अभी असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हैं। जबकि उन्हें यह भी अच्छी प्रकार से समझना चाहिये कि वे केवल ढोंगी धर्मनिरपेक्षता के कारण मुस्लिम पोषित राजनीति से ही इस पद पर दो बार चुने गये। समाचार पत्रों में इनकी विदेश यात्राओं का उल्लेख अवश्य होता रहा है, परंतु इन्होंने मुस्लिम समाज की उन्नति के लिये क्या क्या किया उसका कोई समाचार सम्भवतः नहीं आया? क्या देश की वर्तमान राष्ट्रीय व प्रदेशीय राजनीति में असफल हो रही कांग्रेस व अन्य क्षेत्रीय दलों की पराजय एवं राष्ट्रवादियों की सफलता से कही हामिद अंसारी विचलित तो नहीं हुए? कहीं यह लोकतांत्रिक राजनीति में मुस्लिम मताधिकारकोष के प्रभावहीन होने के कारण मुसलमानों की पिछले 70 वर्षों से चली आ रही ब्लैकमेलिंग का अनैतिक दबाव समाप्त होने की चिंता तो नहीं है? अगर मोदी जी के नेतृत्व में सशक्त केंद्रीय सरकार होने के कारण कट्टरपंथियों व उनके साथियों की अनेक मनमानी गतिविधियों पर भी अंकुश लगने से हामिद अंसारी को मुसलमान डरा हुआ प्रतीत हो रहा है तो कोई आश्चर्य नहीं होगा? अतः ऐसी विपरीत परिस्थितियों में हामिद अंसारी ने संभवतः अपनी पिछले कुछ वर्षों की घुटन को उजागर करके 10 अगस्त को अवकाश प्राप्त करके मुक्ति पायी हो।

भारत की उच्च सांस्कृतिक मानवीय सभ्यता को अगर उन्होंने आत्मसात किया होता तो सम्भवतः वे मुसलमानों में असुरक्षा की मिथ्या चर्चा नहीं करते। अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष रहने पर उन्हें भारत सरकार की मुसलमानों को निरंतर सुख-सम्पन्न करते रहने की योजनाओं का ज्ञान तो अवश्य रहा होगा? क्या उन्हें पाकिस्तान में भारत से गये हुए मुसलमानों के कष्टों का ज्ञान नहीं? क्या वे धर्मनिरपेक्ष भारत में प्रतिवर्ष हजारों करोड़ रुपयों से मुस्लिम समुदाय की केंद्र व राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं को भूल रहे हैं? अल्पसंख्यकों के नाम पर मुसलमानों का निरंतर सशक्तिकरण होने के उपरांत भी भूतपूर्व उपराष्ट्रपति के ऐसे विचार अत्यंत निंदनीय व अशोभनीय हैं। उन्होंने भारत की पवित्र भूमि पर जन्म लेकर व भारत सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर रहकर भी प्रायः भारतीय संस्कृति का सम्मान नहीं किया। विशेषतौर पर रामलीलाओं के मंचो व गणतंत्र दिवस पर उनके व्यवहारों पर राष्ट्रवादी समाज को आपत्ति ही रही। ऐसा क्यों है कि इतना सब कुछ पाने के बाद भी हामिद अंसारी जैसे मुस्लिम समाज के लोग देश की मुख्य धारा से जुड़ना नहीं चाहते और राष्ट्र की आत्मा के प्रति भी अनास्था रखते हैं? क्या ऐसी मानसिकता वाले मुसलमान उच्च पद पाने के उपरांत भी कभी सर्वे भवन्तु सुखिनः की भारतीय संस्कृति को अपनायेंगे? यह कैसी विडम्बना है कि अनेक घनी मुस्लिम बस्तियों से भयभीत होकर पलायन करने वाले बहुसंख्यक हिंदुओं की पीड़ा ने हामिद अंसारी को कभी विचलित नहीं किया। इस्लामिक जिहाद के कारण कश्मीर से पलायन कर चुके लाखों हिंदुओं के उत्पीड़न पर उन्होंने कभी कोई संवेदना प्रकट नहीं करी। पाकिस्तान व बांग्लादेश के हिंदुओं के ऊपर हो रहे अनेक मुस्लिम अत्याचारों को छोड़ भी दें तो भी केरल, पश्चिम बंगाल, आसाम, बिहार, पश्चिमी उत्तर प्रदेश व जम्मू-कश्मीर आदि क्षेत्रों के अनेक नगरों में होने वाली असंख्य हिन्दू विरोधी हिंसक घटनाओं पर भूतपूर्व उपराष्ट्रपति ने कभी कोई संज्ञान नहीं लिया? क्या उन्होंने कभी बढ़ते इस्लामिक आतंकवाद पर चर्चा की या नरसंहार को बढ़ाने वाले जिहादी दर्शन में कोई संशोधन कराने के लिये कोई प्रयास किये? क्या उन्होंने कभी यह साहस करा कि कुरान की उन आयतों में जो बहुत ही खतरनाक और घृणास्पद होने के कारण मुसलमानों व अन्य समुदायों के बीच भेदभाव व द्वेष का निर्माण करती हैं, में आवश्यक संशोधन करवा कर साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ाया जाय। जिन आयतों के संबंध में दिल्ली के मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री जेड.एस. लोहात ने कुरान के विषय में किये गये अपने एक ऐतिहासिक निर्णय में 31 जुलाई 1966 को उल्लेख किया था। ऐसा नहीं है कि हामिद अंसारी इन सब विषयों से अवगत न हो फिर भी भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में अल्पसंख्यकों की ओट में मुस्लिम समुदाय के लिये चिल्लाते रहो तो इस प्रकार उनकी इस्लाम के प्रति शेष पृष्ठ 10 पर

कबिरा खड़ा बजार में

रेलवे बहुत दुखी है, दशहरा तक नहीं मनाया



मुंबई के एलफिंस्टन रेलवे स्टेशन के पुल पर दशहरे से एक दिन पहले भगदड़ मच गई और 23 लोग मर गए। आप कह सकते हैं, इसमें कौन सी बड़ी बात है। इतना बड़ा देश है, इतनी सघन आबादी है, उसमें कहीं न कहीं, कोई न कोई हादसा होता ही रहता है और मौत का क्या है, जब बुलावा आ जाए जाना ही पड़ता है। अब यह तो मरने वालों का दुर्भाग्य था कि वे उस समय उस पुल पर थे, जब भगदड़ मची। लेकिन यह तो मानवनिर्मित आपदा थी, इसमें भाग्य को क्यों जोड़ा जाए। अरे भाई, जब बिजली लाने के लिए सौभाग्य का इस्तेमाल होता है, तो हादसे के लिए दुर्भाग्य न कहें तो क्या कहें। देखो उन 23 लोगों की मौत उन्हें वहां खींचकर ले गई थी। वर्ना रोजाना हजारों लोग मुंबई की लोकल में सफर करते हैं, जिसमें छह-सात लोगों को छोड़कर सब सही-सलामत घर पहुंच जाते हैं। करोड़ों की जनसंख्या में छह-सात लोगों का मरना, कोई बड़ी समस्या तो है नहीं, जिसके लिए रेलवे को दोषी ठहराया जाए। लार्ड एलफिंस्टन के नाम पर 1966 में शुरू हुआ यह रेलवे स्टेशन हमारे राष्ट्रप्रेमी शासकों को शायद विदेशी गुलामी की याद दिलाता था, इसलिए 2016 में महाराष्ट्र सरकार ने इसका नाम प्रभादेवी करने का प्रस्ताव दिया था और रेलवे ने इसे मंजूर भी कर लिया था। नाम बदलने की प्रक्रिया अभी चल रही है। गनीमत है कि नाम अभी बदला नहीं वरना हादसे का दोष भारतीय नाम पर आ जाता, अभी तो अंग्रेजों पर ही इसका टीकरा फोड़ने की गुंजाइश है। वैसे महान अंग्रेजी लेखक शेक्सपियर ने ही कहा था कि नाम में क्या रखा है। वे भारत में होते तो उन्हें पता चलता कि नाम में ही सब कुछ रखा है। एलफिंस्टन का नाम बदलने की प्रक्रिया शुरू करने में वक्त नहीं लगा, लेकिन हालात बदलने की जल्दी किसी को नहीं थी। शायद प्रशासन ऐसी ही किसी बड़ी घटना के इंतजार में था। इस स्टेशन के बेहद संकरे और पुराने फुटओवर ब्रिज पर दिन-ब-दिन यात्रियों की संख्या बढ़ती जा रही थी। इसलिए यात्री लंबे समय से पुल के चौड़ीकरण या नया पुल बनाने की मांग कर रहे थे। यहां तक कि भारत रत्न, राज्यसभा सांसद सचिन तेंदुलकर ने भी नए फुटओवर ब्रिज बनाने की आवश्यकता बताई थी, तो 2016-17 में पांच नए फुटओवर ब्रिज बनाने का आश्वासन तत्कालीन रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने दिया था। लगभग 12-13 करोड़ रुपयों में यह काम हो जाता, अगर सरकार और रेल मंत्रालय वाकई आम यात्रियों की सुविधाओं के लिए फिक्रमंद रहते। लेकिन बजट का रौना रोककर इस काम को टाला गया। अब सरकार का भी क्या कसूर। उसे बुलेट ट्रेन चलाने, समुद्र में शिवाजी की मूर्ति खड़ी करने, स्मार्ट सिटी बनाने के लिए अरबों रुपये चाहिए हैं। इन्हीं सब से तो भारत पूरी तरह खत्म होगा और न्यू इंडिया जन्म लेगा। नेहरू, गांधी की बात छोड़ें, पटेल को भी किनारे करें, मोदीजी के सपनों के न्यू इंडिया पर फोकस करें। विकास तो हासिल उसी से होगा। रही बात इस हादसे की, तो उसके लिए मुआवाजे की घोषणा, जांच की औपचारिकता भी निभा ली जाएगी। अभी तो इस पर राजनीति करने का मौका हाथ लगा है, तो पहले उसे ही भुनाया जाए। इस बार रेल मंत्रालय ने दशहरा नहीं मनाया, उसे यात्रियों के मरने का शोक है। वैसे यही तरीका आजमाया जाए, तो अब तक की रेल दुर्घटनाओं के हिसाब से मंत्रालय एक भी त्योहार नहीं मना पाएगा। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने तो बाकायदा बुराई के प्रतीक रावण का अपने धनुष से खात्मा किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्थापना दिवस मना और देश भर में शस्त्र पूजा भी धूमधाम से हुई। 23 लोग मर गए तो मर गए, उनके साथ कुछ और जिंदगियां तबाह हो गईं तो हो गईं, रावण मारने का मौका तो साल में एक बार ही मिलता है, उसे क्यों छोड़ा जाए। बुराई खत्म होगी, तभी तो देश में अच्छे दिन आएंगे।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2016-17-18

प्राप्तेषु



साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

दिनांक 18 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2017 तक

रजि. सं. 29007/77

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, भक्ति नगर इन्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।